



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

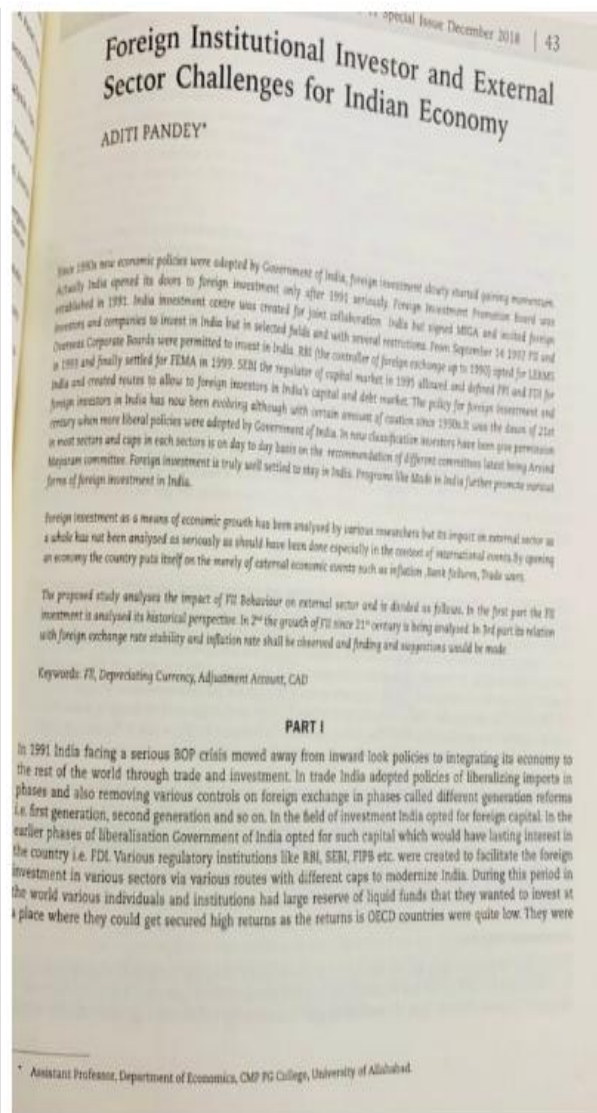
Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



2018

Economics





चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



Hindi



हिन्दुस्तानी
विद्यालय

भाष-७९, अंक-१
जन्मी-मार्च, २०१८

गुडिमी से मान्यता प्राप्त शोध पत्रिकाओं की सूची में सम्मिलित।
सूची में क्रमांक—40930 है।

ISSN: 0578-391X

पता:
हिन्दुस्तानी एकेडेमी
१/१, नमला नैरु रोड, इलाहाबाद-२११००१ (उ.प्र.)
दूरभाष : ०५२२-२४०७६२५

website : <http://hindustaniacademy.com>
email : hindustaniacademyap@gmail.com
Facebook Profile name : hindustani academy allahabad
Twitter : hindustaniacademyap@gmail.com

समान संगठन हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद के नाम मनेआईर/बीक ट्राफ्ट द्वारा भेजे।
एक प्रति रु. ३०.००, वार्षिक : रु. १२०.००
विशेषांक : रु. ५०.००

मुद्रक : आरका पेपर कन्वर्टर्स, इलाहाबाद

प्रकाशित समाजों की गीत-नीति व विचारों से हिन्दुस्तानी एकेडेमी या सम्पादक की सहमति
अधिकार नहीं है। समाज कानूनी विभागी का न्यायक्षेत्र इलाहाबाद उच्च न्यायालय, उत्तर प्रदेश
है।



चैतीह के तिथि नवमी त नौबति बाजे

डॉ० सरोज सिंह

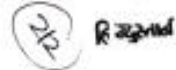
विद्ये वा दत्त की जगत के धार्मिक विश्वसों तथा सामाजिक प्रथाओं के अध्ययन हेतु सांस्कृतिक की आवश्यकता है। अल्प प्रदेश का सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से महत्व अत्यन्त है। इतिहास के पन्नों में अल्प का वैभव, विगत ऐश्वर्य इत्यादि है। इतने धर्मशास्त्रों में बौद्ध संस्था का विधान किया है। अल्प सांस्कृतिक का संरक्षण उत्तर प्रदेश के फैजाबाद, गोरखा, बनौर (हरीत तहसील), प्रतापगढ़, मुन्तानपुर, बनारसपुर, कोशाम्बी, बाबसरी तक फैला है। संस्था का संस्था विद्ये व विद्ये रूप में धार्मिक जीवन से है। अतः इनकी सांस्कृतिक धर्म के साथ ही हो गई है। ये संस्था हमारे सांस्कृतिक धर्म के आधार हैं। सांस्कृतिक की जीने के लिए इनका जीवन बचाना आवश्यक है। प्राचीन आचार्यों ने बौद्ध संस्था का विधान कथक का इनमें गौरीधन, पूष जन्म, मृदुन, यज्ञोपवीत, विवाह तथा गौतम बन्धु संस्था माने गये हैं। अल्प प्रदेश में इन संस्थाओं के चलन की अत्यन्त कमल परम्परा है।

संस्था युग में ही भारतीय स्त्रीधर्मों तथा व्यवसायों ने व्यक्ति के जन्म से मरण तक कई संस्था करने का विधान किया है, जिसका चलन करने से जीवन का कल्याण होता है। प्राचीन काल में इन संस्था करने की बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ सम्पन्न किया जाता था। अब के जन्म में ही जीवन का संस्था करना शुरू हो जाता था। जन्म से इन संस्थाओं की मान्यता है। पक्षी इनके चलन में सते जीसी प्रयास नहीं रह गई हैं। गौरीधनी तुलसीदास : सी ने इन संस्था विधीयों और उनके साथ अनेक कथो-उत्सवों के मूल में भारतीय तथा चिन्ता की जन्म है। ये कोई कार्यात्मक विधान नहीं थे। इनमें जीवन की अन्त-वेला के विकास में सहायक मिलती है। इनका प्रभाव सामूहिक जीवन पर पड़ता था। पूरा परिवार गौतम और समुदाय ऐसे शुरू अवस्था पर एकजिहा होकर पारम्परिकता की मुद्रि करते हैं।

'भारतीय सांस्कृतिक में नारीत्व की पूर्णतः मान्यता में मानी गयी है, अतः नारी के। तिथे में बनने का अक्सर अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं अहोकारणी होता है। साथ ही भारतीय :सांस्कृतिक में पुरुषत्व का इन्तर्गत भी महत्व है कि वह कुल का दीपक अर्थात् कुल की इन्तर्गत करने व उसको चलने बल्य होता है। यही कारण है कि श्री के गन्धीधन के समय में :महा और शुक्राचार्य के रूप में व पुत्र जन्म हो जाने पर सामना पुर्णितवित अहोकारणी होता है। मुक्ति

अंक ७९, अंक १

127



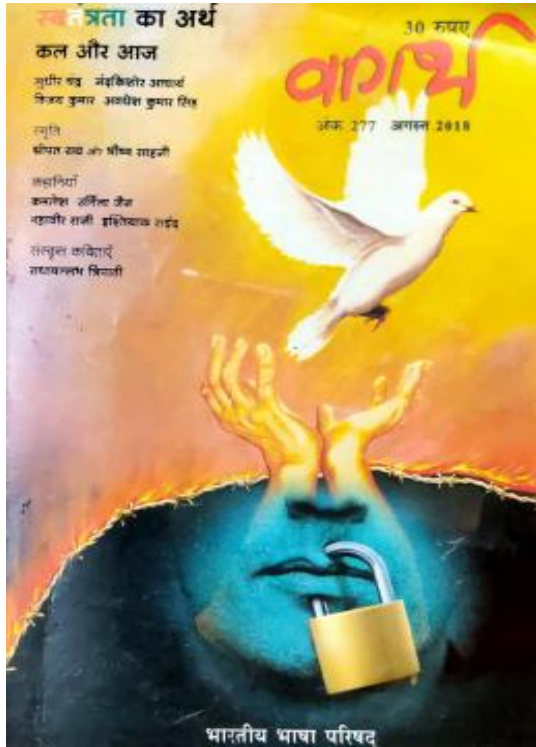


चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



समीक्षा संवाद

उपन्यास शिल्प के नए आयाम सरोज सिंह

उपन्यास वर्तमान समय में सर्वाधिक विचारों की गूँद बनने लग है। पाठक का जो कयासपत्नी ने जो उपन्यास लिखे हैं उनमें चरित्र कुछ विचित्रा सी हुईं सृष्टि में नए गए लगते हैं। नृपान पाँडे कीथर चक्रवर्त के साथ कथाकार भी हैं। उनके नए उपन्यास महोत्सव ने का सौरेक पाठक को आकर्षित करता है। वह उपन्यास पढ़ाया की सैली में लिखा गया है जिसे पढ़ कर संशय के एक छास तृण की स्मृति सामने आ जाती है। इस उपन्यास की कथायामु बड़े बरिसम से वैचार की गई है- अनेक बावर्त का, लोरे से बावर्त करके, हृष-उपर विचारी विचित्र-पौरुषिक सामग्री और जानबूझीके को एकर करके उनके उपन्यास में विशेष लथा है। उपन्यास के प्रारंभ में वह गैर प्रचलित करता है, 'सहेल ने, आ मिलि पार, धम सुन के भेद सुनार, जवम-जवम का का न धूमि, अकरी मिले से बिखरि न जारि सहेल ने।' इस उपन्यास में लगभग 43 पत्र हैं जो क्रमशः लथा लरा, बिधा लनी, लरा दूध, संजीव, हनुमान, सुकुमार बापु, पुत्र ली को संबोधित करके लिखे गए हैं।

ऐसा लगता है कि नृपान पाँडे संशय को जीती है। संशय की दुनिया को औपन्यासिक शिल्प में हलका केवल उनके वक्त की खल है। उन्होंने अपने उपन्यास में पहले वाली उन विषयों एवं लथायों पर लिखा है, जो कभी कथाकार और पाठकपत्नी का लोरेकन जाती थी। उन्होंने दिखाया है कि विषयों को कैसे उनका प्राय नहीं लिखा। ये सवाल में महम एवं समान हसिल नहीं कर पाती। उन्होंने संशय साधक विषयों के जरि समक के रोमुलियन को भी उजागर किया है। ये कालिक हो नहीं, संशय के इतिहास की भी पल-ल-पल खोलती है।

उपन्यास के केंद्र में हैं- अंबली बाई और उनकी ली हीरा। लेनी महारू पत्रिका थी। हीरा एक अंतरज जकल को चंदर आ गई थी, चर में उलकी एक नेटी हुई। जकल की सृष्ट के बाद ली-हेटी बलर आ जाती है और चर अंबली संशय की लार्नि पारी है। उपन्यास दिखाता है कि कैसे उस दौर में लोग रिक्ते पारे नहीं थे, दुने का अकरे धर नहीं उठने के, बल्कि गलत से सक्कल महमूस भी करते थे। इस उपन्यास में चर के रूप में संशय विषयों को चंदर एक नरा अनुभव है। नृपान की




चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in




हिन्दुस्तानी
मासिक
भाग-७९, अंक-२
मार्च-जून, २०१८

SSN : 0378-391X

संस्था का
हिन्दुस्तानी एकेडेमी
१२ डॉ. कमला नेहरू रोड, इलाहाबाद-२११००१ (उ.प्र.)
दूरभाष : ०५३२-२४०७६२५
website : <http://hindustaniacademy.com>
mail : hi.dustaniacademyup@gmail.com
facebook Profile name : hindustani academy allahabad
twitter : [hi.dustaniacademyup@gmail.com](https://twitter.com/hi.dustaniacademyup)

समस्त पुस्तान हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद के नाम मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजें।
शुल्क : एक प्रति रु. ३०.००, वार्षिक : रु. १२०.००

मुद्रक : आस्था पेपर कन्वर्टर्स, इलाहाबाद

प्रकाशित रचनाओं को रीति-नीति व विचारों से हिन्दुस्तानी एकेडेमी या सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। समस्त कानूनी विवादों का न्यायक्षेत्र इलाहाबाद उच्च न्यायालय, उत्तर प्रदेश

पञ्चावत—लोक भाषा अवघी में लोक संस्कृति
का आख्यान

डॉ० आभा त्रिपाठी

पञ्चावत लोक संस्कृति का लोक भाषा में आख्यान है। सम्प्रति जब कल्प प्रयोजन पर विचार करते हैं तब प्रथम प्रयोजन 'पञ्च' के रूप में निर्दिष्ट करते हैं। पञ्चलोक प्रथम लोक भाषा का प्रयोजन भी वरा-वरा की आकांक्षा के रूप में स्पष्ट करते हुये करते हैं, "और यदि जानि लखित यह बोलना । मकु-पुन वही जगत यह चीजना।"

कवि को इस आकांक्षा के अतिरिक्त एक अन्य प्रयोजन भी इस भाषा में परिगलित होता है वह है लोक में प्रचलित जगमगी-पञ्चावती-रतमसेन की कथा का कल्पवृक्ष वर्णन जिसे वे दोहा-चौपाई की शैली में "भाषा" में लिखते हैं। तुलसी नामा पुराण निम्नलिखित साम्प्रदायिकता को सामान्य जन के लिए "भाषा" में लिखते हैं और जयसी लोक में प्रचलित जगमगी-पञ्चावती में रचते हैं जिसमें कथा का जो स्वरूप पञ्चावत में आद्यन्त प्रचलित है उसे जन्ता की भाषा में रोप और काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया जा सके क्योंकि रोप कथाओं की जनता के बीच अधिक ग्राह्य होने के साथ सुरक्षित होने की सम्भावना की रहती है। वे लिखते हैं—“आदि अल्प जति कथ्य अहै, लिखि कथा चौपाई रहै।” इस सम्बन्ध में डॉ० नगेन्द्र का कहना है कि, “सम्भवतः जयसी को यह कहानी किसी हिन्दीतर भाषा में उपलब्ध हुई थी। डॉ० हरदेव बहरी ने प्राकृत साहित्य का इतिहास में जयसी से बहुत पूर्व प्राकृत में रचित रत्नेश्वर कथा का परिचय दिया है जिसकी कथावस्तु पञ्चावत की कथा में गहरा सम्य रखती है।” आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एक विशद उद्देश्य की परिश्रमना करते हैं। वे लिखते हैं, “हिन्दू हट्टप और मुसलमान हट्टप आसने सामने करके अवनवीचन फिटाने वाली में 'इन्ही' का नाम लेना पड़ेगा। इन्होंने मुसलमान होकर हिन्दुओं को कथानिर्वाहि हिन्दुओं को ही बोलने में पूरी सहदयता से कहकर उनके जीवन की गर्मगर्मीनी आकांक्षाओं के साथ अपने उदा हट्टप का पूर्ण सम्यजन्य दिखा दिया। कबीर ने केवल भवन प्रतीत होने हुई परेश यना की एकता का आभाम दिया था। कल्प्य जीवन की एकता का एक सामने रखने की आवश्यकता बनी थी। यह जयसी द्वारा पूरी हुई।”

इस में रतमसेन-पञ्चावती की देवकथा, जगमगी का विग्रह, चिट्ठी-चौपाई के अर्थ,



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in




हिन्दुस्तानी
त्रैमासिक

भाग - ७९, अंक - ३
नवम्बर - दिसम्बर, २०१८

ISSN : 0378-391X

प्रकाशक
हिन्दुस्तानी एकेडेमी
१२ वीं, कमला नेहरू रोड, इलाहाबाद-२११००१ (उ.प्र.)
दूरभाष : ०५३२-२४०७६२५

website : <http://hindustaniacademy.com>
email : hindustaniacademyup@gmail.com
Facebook Profile name : hindustaniacademyallahabad
Twitter : hindustaniacademyup@twttr.com

सम्पत्त भूगलान हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद के नाम मनीअर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजें।
मुद्रक : एक प्रति रु. ३०.००, वार्षिक : रु. १२०.००
विशेषांक : रु. ५०.००

मुद्रक : आस्था पेपर कन्वर्टर्स, इलाहाबाद

प्रकाशित रचनाओं की प्रति-भेंटि या विचारों से हिन्दुस्तानी एकेडेमी या सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। सम्पत्त कायदा विषयों का व्यापक इलाहाबाद उच्च न्यायालय, उच्च प्रदेस होता।



डॉ० दीनानाथ

भोजपुरी लोकगीतों में दलित चिंतन

लोक साहित्य एक ऐसा मनोरंजन साहित्य है जिसकी पारंपरिकता मौखिक रूप में होती है। मानव जीवन के विचलन के साथ ही इसका विकास भी मानव का संभव है। लोक साहित्य का पहला लक्ष्य विलोचन है जो ऐसे साहित्य का शोध करता है जहाँ स्वभाव में ही का जीवन-वाचन होता है। यह साहित्य हमें विश्व साहित्य से अलग होने का शोध करता है क्योंकि जहाँ विश्व साहित्य लिपिबद्ध होता है, वहीं लोक साहित्य को मौखिक परंपरा बनती रहती है। मौखिक परंपरा में अनेक कारण इसके संरक्षण की संपूर्ण व्यवस्था नहीं हो पाती है। जिस तरह से वैदिक परंपरा के समन्वित लौकिक परंपरा (अमौखिक परंपरा) चलती रही हैं, उसी तरह विश्व साहित्य के समन्वित लोक साहित्य भी हर युग में उत्तमतरा दर्ज करता रहता है।

डॉ० रवीन्द्र प्रभार ने इसके कुछ लक्षणों के आधार पर इसे परिभाषित करते हुए प्रस्ताव किया है- "लोक साहित्य लोक-वासस की महत्त्व और स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। यह बहुधा अनिश्चित ही रहता है और अपने मौखिक परंपरा द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक अनेक बदला रहता है। इस साहित्य के रचनाता का जन्म प्रायः अज्ञात रहता है। लोक का कर्ता जो कुछ कहता-सुनता है, उसे समूह की जाती बनकर और समूह में चुन-मित कर ही रहता है।" वास्तव में लोक साहित्य ज्वलित विशेष के अन्तर्गत पर जनता-बनारस को अपना सब कुछ मानता है जिसमें उसके समाज को धारणार्थ पुष्किल होती दिखाई देती है। पंडित रामनरेश विष्टाजी तो इसे वेदों की तरह अपौरुषेय कहते हैं। क्योंकि इसमें रचनाकारों के नाम का कहीं उल्लेख नहीं रहता है।

आचार्य इन्दारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक साहित्य पर अपना विचार व्यक्त करते हुए लिखा है- "ऐसा मान लिया जा सकता है कि जो चीजें लोकविषय से सीधे उत्पन्न होकर सर्वसाधारण को आंदोलित, चरित और प्रभावित करती हैं, वे ही लोक-साहित्य, लोक-गीत, लोक-नाट्य, लोक कथनक आदि नामों से पुकारी जा सकती हैं।" इस परिभाषा में 'सर्व साधारण' शब्द विशेष महत्व का है जिसमें आम जनता, गरीब जनता, अल्पज जनता, कर्मिक-दलित-निचली जनता को देखा जा सकता है। इन्हें लोक साहित्य में दलित और निचली जातियों का ही शोध अधिक रहा है। इन जातियों के नाम पर लोक नृत्यों और लोक गीतों के नाम पड़े हैं जैसे- कहरक, धोबिया नाच, अहिरकला, जौधिया नाच, पंचगा, किला इत्यादि किसी न किसी जाति से जुड़े हुए नाम प्रसिद्ध हैं। इन लोक गीतों और लोकनृत्यों का संरक्षण और

हिन्दुस्तानी // ११०

Mathematics



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



Saddle Point Criteria for Semi-infinite Programming Problems via an η -Approximation Method



Yadendra Singh and S. K. Mishra

Abstract In this paper, we consider a semi-infinite programming problem involving differentiable convex functions. We construct an η -approximated semi-infinite programming problem associated with the original semi-infinite programming problem and establish relationship between its saddle point and an optimal solution. We also establish relationship between an optimal solution of original semi-infinite programming problem and saddle point of η -approximated semi-infinite programming problem. Examples are given to illustrate the obtained results.

Keywords Semi-infinite programming · Generalized convexity · Optimality conditions

1 Introduction

In semi-infinite programming problems, the term semi-infinite means finitely many variables appear in infinitely many constraints. In recent years, semi-infinite programming problems have been an active field of research. Vaz et al. [1] have described how robot trajectory planning can be formulated as a semi-infinite programming problem. Tong et al. [2] have solved an optimal power flow problem with transient stability constraints by converting it to a semi-infinite programming problem. Vaz and Ferreira [3] have shown that air pollution control problems can be posed as semi-infinite programming problems. Waterfield [4] has discussed semi-infinite programming problem in gemstone cutting industry.

Y. Singh
C.M.P. Degree College (A Constituent Postgraduate College of Central University of Allahabad),
Allahabad 211002, India
e-mail: yingsh@gnail.com

S. K. Mishra (✉)
Department of Mathematics, Institute of Science, Banarus Hindu University,
Varanasi 221005, India
e-mail: bsk@mishra@gmail.com

© Springer Nature Singapore Pte Ltd. 2018
S. Kar et al. (eds.), *Operations Research and Optimization*, Springer Proceedings
in Mathematics & Statistics 225, https://doi.org/10.1007/978-981-10-7814-9_2

17

Psychology



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



ISSN: 2294 - 2033 (Print)
ISSN: 2294 - 2061 (Online)
E-ISSN: 2294-2066/7668
www.ojsps.com

ORIGINAL RESEARCH PAPER

Open Journal of Psychiatry & Allied Sciences

Psychological well-being and weight efficacy lifestyle of adults with obesity

Abstract

Background and aim: Obesity is a growing phenomena and various psychological constructs need to be addressed in obesity as psychological aspects play an important role in the development and maintenance of obesity. Psychological constructs related to obesity such as weight efficacy lifestyle play a dynamic role. There is a dearth of studies on weight efficacy lifestyle and psychological well-being among obese adults especially in the Indian setting. The aim of the present study was to examine the differences in psychological well-being and weight efficacy lifestyle in obese and normal weight Indian adults. **Methods:** The sample involved 200 obese adults aged 18 to 60 years and 100 normal adults belonging to age group 18 to 42 years. Body mass index, Weight Efficacy Lifestyle (WEL) scale and Ryff's Psychological Well-Being (PWB) scale were used to collect the data. t-test was used to study the differences between the two groups of obese adults and normal weight adults. **Results and conclusions:** The findings revealed that there were significant differences in WFL scale for two sub domains (negative emotions, $t=3.122, p<0.01$ and social pressures, $t=2.724, p<0.01$) between the obese adults and the normal weight adults indicating that the obese adults experienced lesser negative emotions and social pressures as compared to the normal weight adults. On the PWB scale there were significant differences in three sub domains such as autonomy ($t=2.725, p<0.01$), environmental mastery ($t=2.495, p<0.05$), and self-acceptance ($t=2.146, p<0.05$) between the obese adults and the normal weight adults indicating that obese adults had lower autonomy, poorer environmental mastery, and lesser self-acceptance than the normal weight adults.

Keywords: Body Mass Index, Autonomy, Eating

Harpreet Mehar¹, Shikha Srivastava¹,
Ranjana Tiwari²

¹Assistant Professor in Clinical Psychology, Child Development Centre, Department of Pediatrics, Maulana Azad Medical College, New Delhi and PhD Scholar at Gulbarga University, Greater Noida, Uttar Pradesh, India, ²Program Chair and Assistant Professor, Department of Applied Psychology, School of Humanities and Social Sciences, Gulbarga University, Greater Noida, Uttar Pradesh, India, Assistant Professor, Department of Applied Psychology, School of Humanities and Social Sciences, Gulbarga University, Greater Noida, Uttar Pradesh, India

Correspondence: Harpreet Mehar, Flat No. 4/77, Sector D, Pocket 4, VasantKunj, New Delhi-110070, India. harpreetmehar@gmail.com

Received: 11 January 2017

Revised: 1 August 2017

Accepted: 2 August 2017

Issue: 24 August 2017

DOI: 10.5958/2294-2066.2016.00002.1

Introduction

Despite medical advances in the treatment of obesity, it is an increasing phenomenon in the world. Obesity cannot involve only addressing physical health aspects but psychological aspects related to obesity as well need to be looked into. If only the physical aspects are addressed the vicious cycle of gaining and losing weight would continue for many obese individuals [1]. Psychological issues play a significant role in the development and consequences of obesity and hence obesity is as much a psychological problem as a physical problem [2]. To look at the psychological aspects in obese adults it would be interesting to see the psychological well-being of obese adults. Psychological well-being has been defined as "The striving for perfection that represents the realization of one's own true potential" [3]. Psychological well-being of an individual is influenced by other psychological variables such as weight efficacy lifestyle.

Lifestyle of an individual influences obesity however weight efficacy lifestyle is related specifically to the weight of an individual. It is a relatively newer concept and needs to be researched further. Weight efficacy lifestyle has been hardly researched in India. Self-efficacy is defined as an individual's

ability to perform on a task so as to mediate the performance on future tasks [4]. To address this concern in obese adults, the concept of weight efficacy lifestyle was developed that assesses an individual's confidence to abstain from eating in a variety of different situations [5].

To gain insight on role of psychological well-being and weight efficacy lifestyle in obesity, it is important, first to establish if there are significant differences in these aspects among obese and normal weight adults. Hence in the present study psychological well-being and weight efficacy lifestyle are compared between obese as well as normal weight Indian adults.

Method

Objectives

To study the difference in psychological well-being and weight efficacy lifestyle between obese adults (study group) and normal weight adults (comparative group).

Hypothesis

Psychological well-being and weight efficacy lifestyle of obese adults would be poorer than normal weight adults.



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

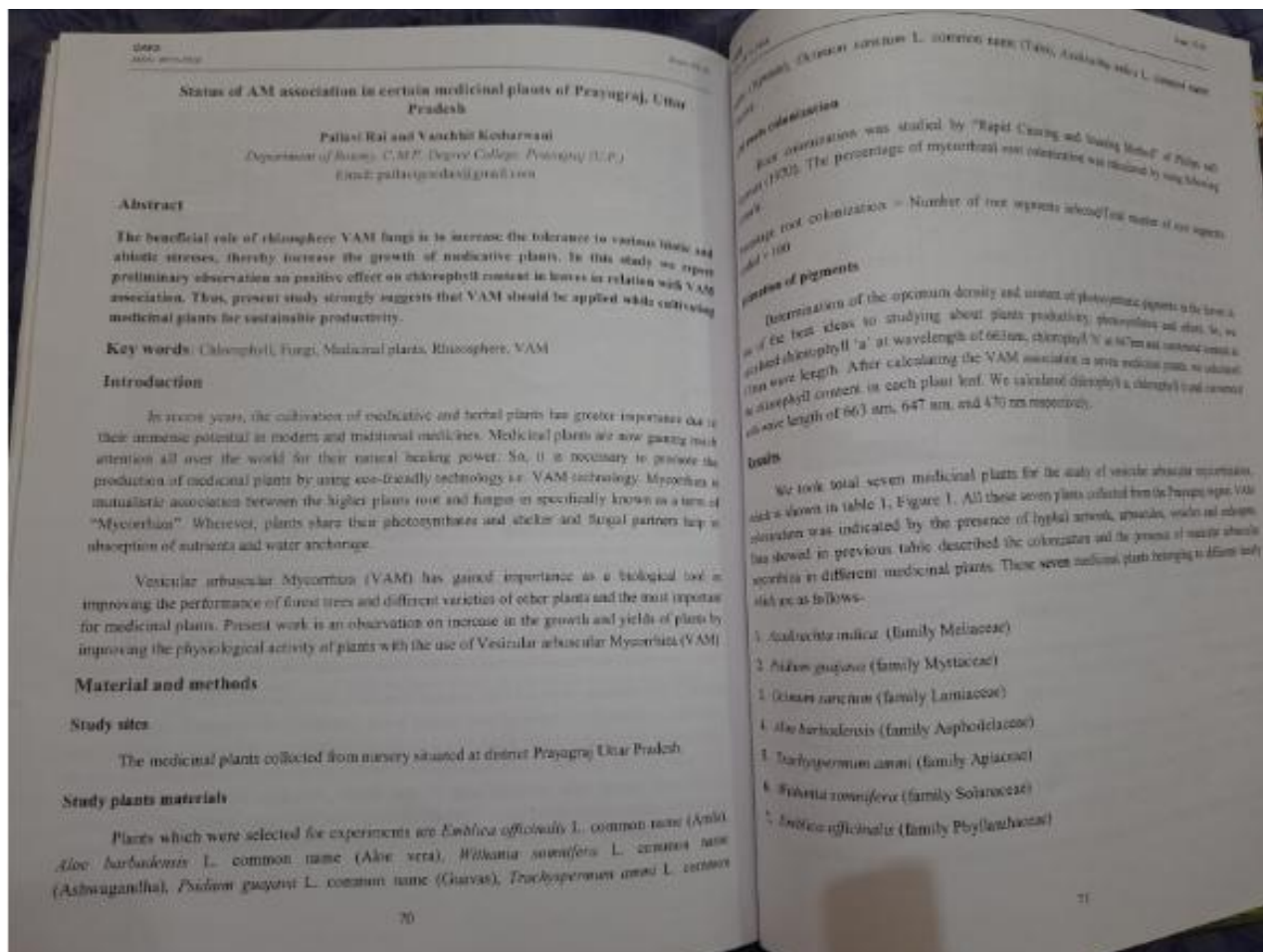
Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



2019

Botany



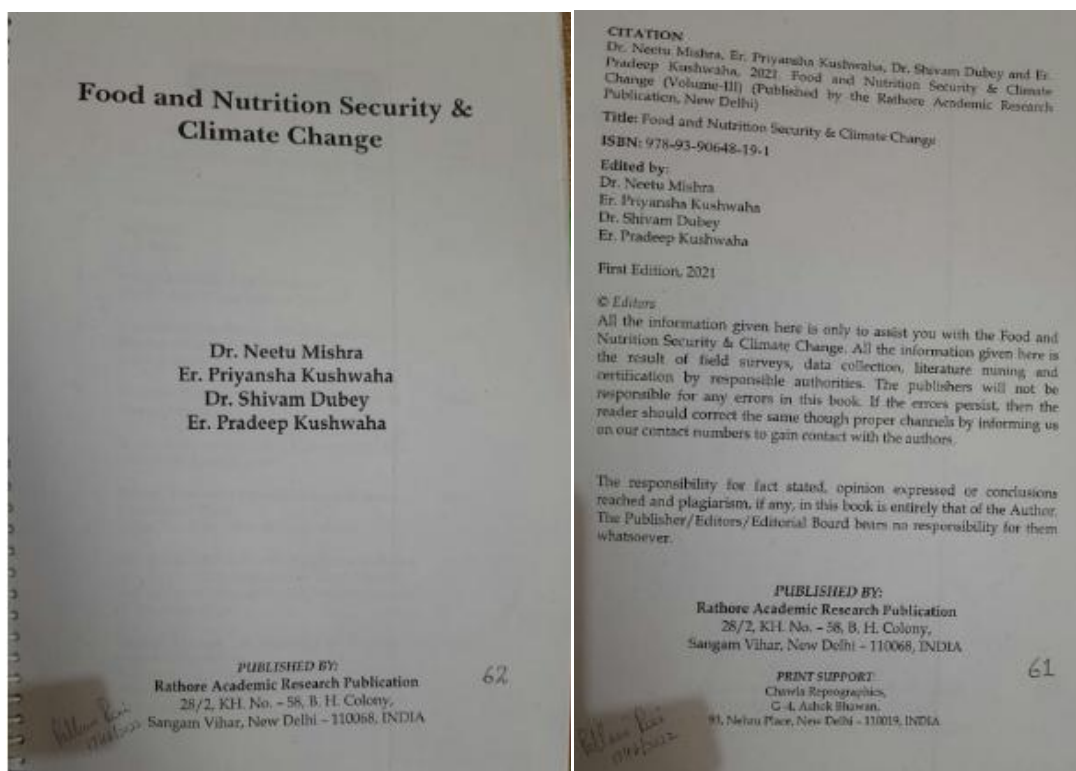


चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in





चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



Education



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय

C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)
Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme
Website: www.cmpcollege.ac.in



THINK INDIA JOURNAL

ISSN 0971-1286

Vol 22 Issue 18 November 2020

Attitude of Student-Teachers towards Four Year Integrated Teacher Education Programme

Dr. Kishor Kumar* & Dr. Jitendra Kumar**

Assistant Professor

*School of Education, Central University of South Bihar, Gaya, Bihar, India

**Department of Education, CMP College, University of Allahabad (A Central University)

Email: jitendrakumar@gmail.com, Mobile: +91-97500-0102

Abstract: The research aimed to study the attitude of student-teachers towards Four-year Integrated Teacher Education Programme. The study was conducted at Gaya, Bihar and Kishanganj, Odisha on the sample of 292 student-teachers. Standardized attitude scale was developed by the researchers to study the attitude of student-teachers. On the basis of findings it was concluded that student-teachers of different surroundings have positive attitude towards four year integrated teacher education programme. There was no significant difference between male and female, rural and urban, B.Sc.-B.Ed. and B.A.-B.Ed. student-teachers towards Four Year Integrated Teacher Education Programme but significant difference was found between student-teachers of Central University of South Bihar and Regional Institute of Education, NCEERT, Kishanganj.

Key Words: Attitude, Student-Teachers, Four Year Integrated Teacher Education Programme

Introduction

Education is an instrument for preparing younger generation for which efficient teachers are needed. Teachers are considered to be agents for change, when these agents enter teacher education institutions through central education process (CAP) they form a heterogeneous class with regard to various factors like subject, age, gender, socioeconomic status, working efficiency, etc. We teach our trainees the value of fostering strong relationships between adults and children. We believe in learning together. Teachers should be taught to take responsibility for establishing the environment based on the ongoing inputs derived from children. Through our teacher training education programme in India, teachers learn to develop links between the resources in the environment and the parents of the children. Our trainees learn that by observing, questioning, suggesting and being a model, teachers challenge and encourage children, sharing in their enthusiasm, excitement and their desire to learn. We teach our trainees that activities should be planned, child-centred, spontaneous, self-guided, project-based and innovative. A strong component of our teachers training program is the development of empathetic thinking among children whereby our trainees are taught to generate in children an understanding of another person's thoughts and feelings as well as the development of problem-solving skills including helping, turn-taking, co-operating with others and sharing.

Teaching

Page | 158

Copyright © 2020 Authors

Self attested
/s/



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



Mathematics

COMMUNICATIONS

on

Applied Nonlinear Analysis

ISSN 1074 – 133X

A GREAT AMERICAN JOURNAL

Volume 26 Number 3 July 2019

International Publications

Communications on Applied Nonlinear Analysis Volume 26(2019), Number 3, 30 - 43

On Lagrange Type Duality Theory for Nonsmooth Optimization
Problems with Equilibrium Constraints

Yadvendra Singh
C.M.P. Degree College
Allahabad University
Prayagraj, India

Kunwar V. K. Singh and S. K. Mishra
Banaras Hindu University
Department of Mathematics
Institute of Science
Varanasi-221005, India
kvsnth@gmail.com

Communicated by Ram U. Verma

(Received November 30, 2018; Revised Version Accepted March 18, 2019)

www.internationalpubs.com

Abstract

In this paper, we consider a special class of optimization problems known as the mathematical problem with equilibrium constraints (MPEC). We formulate Lagrange type dual problems for the MPEC and establish weak and strong duality results under convexity assumptions. Further, we discuss the saddle point optimality criteria for the MPEC. An example is given to illustrate the obtained results.

AMS Subject Classification: 90C30, 90C33, 90C46

Key words: Mathematical programming problems with equilibrium constraints, Nonsmooth analysis, Duality, Saddle points.



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



Political Science

Projecting Rising China's Soft Power : A Strategy for Global Influence

Sanjay Srivastava and Govind Gaurav

Introduction

At the beginning of the twenty-first century, China is poised to become a major power of the world. China intends to achieve this goal by expanding its economic and military power which it believes will allow China to better shape its security environment, defend its core interests, propel its economic strength and create opportunities to enable it to attain the great power status. Hence, China has been consistently pursuing three major foreign policy goals at world stage-first; China wants to maintain an environment that promotes its robust economic growth,second; China aims to carefully manage its growing economic power to advance its military prowess, and third,China desires to extend its global influence and preeminence around its periphery (Gill 2005 :248). In the pursuit of these goals China devoted all its endeavours to enhance its economic and military strength till 2007. But these endeavours only helped China to attain first two goals of its foreign policy and was failed to achieve the third one- to extend its global influence as the growing military and economic power of it, developed a threat perception of China for the world.

But thanks to the farsighted Chinese leadership who understood the challenges and the increasing role of the image-building in the changing scenario of world politics.2008 Beijing Olympic was the event which gave an overwhelming opportunity to China to alter its image across the world, "from threat to opportunity; from danger to benefactor" (Kurlantzick 2007:5). The year 2008 marks a new high-point in China's international reputation. The huge success of the Olympic game was certainly a visible marker of the China's rise to power and prestige.

China understands the effectiveness of soft power in comparison to hard power in acquiring the global influence. And, it certainly started exercising soft power offensively around the world. Shanghai World Expo 2010 put another feather in the cap where China demonstrated soft power by design, tourism and culture at the best. In the last decade, the Chinese government has committed to boosting its appeal abroad. China has been developing an international media network and establishing cultural study centers around the world to promote China's traditions, values, language, and culture with the aim to win more friends and to enhance the country's image (Albert 2018).

Madhya Bharti-76, January-June, 2019, ISSN 0974-0066, pp. 172-177
UGC Care List, Group-C (Multi disciplinary), Sl.no.-15

Self Attested
Gaurav



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय

C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)
Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme
Website: www.cmpcollege.ac.in



Bhugol Swadesh Charcha [Multidisciplinary International Journal]

Page ID: BhugolSC-1617

COVID-19—A STUDY

Dr. Saugata, Dr. Abhis Singh

Associate Professor, Department of Education, C.M.P. College, University of Allahabad, Prayagraj

CORONA VIRUSES are a big family of different viruses. Some of them cause the common cold in people and other infect farm animals like hens, goats and cattle. Corona virus enters in human cells through envelope ACE-2 receptor. WHO and ECDC advised – Avoid public place, follow social distancing and close contact to infected persons and animals. COVID-19 is a corona virus of viruses but it has changed all human life.

1. CORONA VIRUSES HISTORY AND ORIGIN

CORONA VIRUSES were first discovered in the 1930s when an acute respiratory infection of domesticated swine was shown to be caused by infectious bronchitis virus (IBV). According to Canadian study 2001 – first case of human Corona virus were identified in the system. 17-18 cases of them were confirmed as infected with Corona virus strain by pole across chain reaction. Researchers found a group of similar human and animal viruses and named them. After their Corona like appearance. Seven Corona viruses can infect humans.

During 2002 and 2003 – This time Corona was treated as simple not fatal virus. Various reports published with proofs of spreading the corona to many countries, United States, America, Hong Kong, Singapore, Vietnam, Thailand, Taiwan etc. several case of severe acute respiratory syndrome caused by corona and their mortality more than 1000 patients was reported in 2003, name is SARS – COV.

During 2004, 2005, 2012, and 2014 – This was the black year for microbiologists. After these microbiologists started thinking on this problem. After deep researches they concluded and understand the pathogenesis of disease and discovered as Corona virus. But till total 8000 patients was confirmed as infected with HCoV NSC43 virus so in 2004, HCoV NSC43 in 2005. World Health Organization and centers for disease control and prevention declared as "State Emergency". Another study report of Hong Kong was confirmed 30 patients of severe acute respiratory syndrome while 30 of them were confirmed as Corona Virus infected in 2012. MERS COV started in Saudi Arabia in 2012. Almost all at the nearly 2,500 cases have been in people who live in or travel to the Middle East.

This Corona Virus is less contagious than its SARS cousin but more deadly killing 856 also causes kidney failure. May of 2014 patients had recently travelled to Saudi Arabia suffered to Corona Virus, most cases have occurred in the Arabian Peninsula it is still unclear how the virus is transmitted from camels to humans. Its spread is uncommon outside of hospitals. Thus, its role to the global population is currently deemed to be fairly low.

Corona virus disease COVID-19 is an infection disease caused by a newly discovered Corona Virus people can get the infection through close contact with a person who has symptoms from the virus was spread via airborne. Spore-like virus was replicated inactivated epithelium that caused cellular damage and infection site.

Many people with Covid-19 experience only mild symptoms. This is particularly true in the early stages of the disease it is possible to catch Covid-19 from some reports have indicated that people with no symptoms can transmit the virus it is not yet known how often it happens.

A Novel Corona virus outbreak was first documented in Wuhan, Hubei province, China in December 2019, it has now been confirmed in six continents and in more than 1000 countries.

2. ANTHROPOGENIC FACTORS SPREADING COVID-19

There are many anthropogenic factors cause viral manipulation as we have seen in case of Novel Corona Virus (COVID-19) probably some are below –

Wet market in China



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय

C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)
Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme
Website: www.cmpcollege.ac.in



Bhugol Swadesh Charcha [Multidisciplinary International Journal]

Page ID: BhugolSC-1617

COVID-19—A STUDY

Dr. Saugata, Dr. Abhis Singh

Associate Professor, Department of Education, C.M.P. College, University of Allahabad, Prayagraj

CORONA VIRUSES are a big family of different viruses. Some of them cause the common cold in people and other infect farm animals like hens, goats and cattle. Corona virus enters in human cells through envelope ACE-2 receptor. WHO and ECDC advised – Avoid public place, follow social distancing and close contact to infected persons and animals. COVID-19 is a corona virus of viruses but it has changed all human life.

1. CORONA VIRUS HISTORY AND ORIGIN

CORONA VIRUSES were first discovered in the 1930s when an acute respiratory infection of domesticated swine was shown to be caused by infectious bronchitis virus (IBV). According to Canadian study 2001 – first case of human Corona virus were identified in the system. 17-18 cases of them were confirmed as infected with Corona virus strain by pole across chain reaction. Researchers found a group of similar human and animal viruses and named them. After their Corona like appearance. Seven Corona viruses can infect humans.

During 2002 and 2003 – this time Corona was treated as simple not fatal virus. Various reports published with proofs of spreading the corona to many countries, United States, America, Hong Kong, Singapore, Vietnam, Thailand, Taiwan etc. several cases of severe acute respiratory syndrome caused by corona and their mortality more than 1000 patients was reported in 2003, name is SARS – COV.

During 2004, 2005, 2012, and 2014 – this was the black year for microbiologists. After these microbiologists started thinking on this problem. After deep researches they concluded and understand the pathogenesis of disease and discovered as Corona virus. But till total 8006 patients was confirmed as infected with HCoV NSU43 virus so in 2004, HCoV NSU43 in 2005. World Health Organization and centers for disease control and prevention declared as "State Emergency". Another study report of Hong Kong was confirmed 30 patients of severe acute respiratory syndrome while 36 of them were confirmed as Corona Virus infected in 2012. MERS COV started in Saudi Arabia in 2012. Almost all at the nearly 2,500 cases have been in people who live in or travel to the Middle East.

This Corona Virus is less contagious than its SARS cousin but more deadly killing 856 also causes kidney failure. May of 2014 patients had recently travelled to Saudi Arabia suffered to Corona Virus, most cases have occurred in the Arabian Peninsula it is still unclear how the virus is transmitted from camels to humans. Its spread is uncommon outside of hospitals. Thus, its risk to the global population is currently deemed to be fairly low.

Corona virus disease COVID-19 is an infection disease caused by a newly discovered Corona Virus people can get the infection through close contact with a person who has symptoms from the virus was spread via airborne. Spore-like virus was replicated inactivated epithelium that caused cellular damage and infection site.

Many people with Covid-19 experience only mild symptoms. This is particularly true in the early stages of the disease it is possible to catch Covid-19 from some reports have indicated that people with no symptoms can transmit the virus it is not yet known how often it happens.

A Novel Corona virus outbreak was first documented in Wuhan, Hubei province, China in December 2019, it has now been confirmed in six continents and in more than 1000 countries.

2. ANTHROPOGENIC FACTORS SPREADING COVID-19

There are many anthropogenic factors cause viral manipulation as we have seen in case of Novel Corona Virus (COVID-19) probably some are below –

Wet market in China



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



Alochana Chakra Journal

ISSN NO:2231-3990

RASHTRIYA UCHCHHATTAR SHIKSHA ABHYAN (RUSA) AND ITS PROVISIONS FOR GIRL'S EDUCATION

Dr. Abendra Kumar¹ & Dr. Sharmila Srivastava¹

¹ & ² Assistant Professor, Department of Education, CMP College, University of Allahabad (A Central University), Uttar Pradesh, India

Abstract: It is not doubt that education is a strong and effective weapon to survive in the society. Many children are going an education like as SSA (at elementary level), RMSA (at secondary level), RUSA (at higher education level) etc. In this aspect, in the 12th Plan period, RUSA have a financial outlay of Rs. 22,813 crore, of which Rs.16, 227 crore will be the Central share. In addition, allocation of Rs. 1,800 crore in the 12th Plan for the existing scheme. Sub-Mission provisions will also be introduced in RUSA. This five total central share, including the existing scheme of polytechnics will be Rs. 18,027 crore during the 12th Plan. RUSA is a Centrally Sponsored Scheme spread over two plan periods, for improving access, equity and quality of the state higher education system. With over 90 percent of students enrolled in the state higher education system, there is a need for State colleges and universities to be strengthened through strategic central funding and implementing various such useful reforms. RUSA also aims to motivate States to step up plan investments in higher education.

RUSA made an many provisions for girl's education and in this manner, colleges and universities are getting funds from this scheme. In this paper, we will know the facilities for girls' women education under RUSA.

Key Words: Girl's Education, Higher Education, Gender Disparity, SSA, RMSA & RUSA

1. Introduction

The success of Sarva Shiksha Abhyan (SSA) and Rashtriya Madhyamik Shiksha Abhyan (RMSA) has laid a strong foundation for primary and secondary education in India. However, the system of higher education has still has not seen any assumed efforts for improvement in access or quality. The Cabinet Committee on Economic Affairs has approved the Rashtriya Uchchatar Shiksha Abhyan (RUSA), a Centrally Sponsored Scheme (CSS) for reforming the state higher education system.

Today, the higher education system as a whole is faced with many challenges such as financing and management, access, equity, relevance and reorientation of policies and programs for laying emphasis on value, ethics and quality of higher education together with the assessment of institutions and their accreditation. These issues are of vital importance for the country, since higher education is the most powerful tool to build a knowledge-based society for the future. The necessity of the challenges of providing equal opportunities for quality higher education to an ever-growing number of students is also a historic opportunity for reorienting sectoral and social imbalances, reorganizing institutions, crossing international benchmarks of excellence and extending the frontiers of knowledge.



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



Studies in Indian Psychology
(UGC Care Journal)

2020-2021

DOI: 10.1007/s12052-020-00100-0

A Study of the Parental Pressure and Its Influence on Students Academic Achievement at Secondary Level

Dr. Himanshu Kumar & Ms. Sharmila Srivastava

Assistant Professor

CMP College, University of Allahabad (A Central University), Uttar Pradesh, India

Abstract: The study is focused on early achievement since parentization tends to mount up during this period and their urge for autonomy run wide than recent parental control. This in turn can lower their academic interest as well as their academic performance. Parental parentization in studies can be destructive to the confidence of children. Also, too much emphasis on studies, being overprotective for self-enclosed and aggressive, might extinguish the spark of Creativity in adolescents. The age from 10 to 14 years is considered as one of the critical periods in life during which creative ability can be cultivated most effectively. Aim of the present study is to determine the parental pressure and its influence on student's Academic achievement at secondary level. For this investigation, a sample consisted of 200 students of secondary level from Delhi region. The results of the study find the need for self-enclosedness while teaching in children's studies and extra-curricular activities. This is especially important in children from the low socio-economic status, because of the high pressure they are found to possess in the present study. The high positive link between Self-esteem and academic interest found in the study has contributed to the existing literature on self-esteem and children's education. The study suggests that improved self-esteem accompanies better academic interest along with low levels of stress in the examinations and vice versa. The prediction of creativity scores by academic achievement shows a high positive link between creativity and academic achievement revealing the reveal significant positive interrelationships among academic achievement, creativity and self-esteem and its existing literature relating the variables parentization, the study provides evidence to the stress-related problems of adolescents.

Key Words: Parental Pressure, Academic Interest, Actual Academic Achievement, Self-esteem, Creativity

Introduction

Academic parentization by parents to a certain extent, serves as a motivating force facilitating better academic performance by the children. Unfortunately, many Indian parents fail to keep up the golden mean of academic parentization. They tend to be very demanding and controlling, forcing their children to assimilate much more than they can, without realising their potentialities and limitations. The curricula have become examination-oriented, promoting rote learning and over burdening the children. The problem of parental



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय

C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)
Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme
Website: www.cmpcollege.ac.in



Parishadi Journal

ISSN NO:2347-6648

WAYS OF SEXUAL ABUSE AND PREVENTING TECHNIQUES

Dr. Jhendra Kumar¹ & Ms. Sharmila Sebastiana²

¹ & ² Assistant Professor, Department of Education
CMP College, University of Allahabad (A Central University), Utra Pradesh, India

Abstract: Sexual abuse may involve touching private parts, making him or her to touch himself or others, looking together, showing the child sexually oriented photographs or films, taking pornographic photographs, making personally gratifying sexual comments in front of, or with reference to the child, forcing the child to indulge in oral or anal sex and sexual intercourse. The body of a girl child is not the private or public domain of men where all men by their mere to be regarded as men.

By sexual assault, men misuse power over the most private aspect of a child's life, her body. Sexual assault is an assault against children in its physical, emotional, psychological, moral and social level. Sexual abuse is a widespread subject and people do not like to talk about it. Concerted efforts are made to concern the subject. Girl children, irrespective of their racial and ethnic background, economic status, caste, creed and religion have been sexually abused. Their 'vulnerability' and 'perpetrator' positions are taken advantage of by the abuser who uses his power to cause his desires. The inalienable crime is an addition under layers of guilt, shame and societal pressure that it goes undetected and unreported. While in victim the soul the torment all their lives. In this paper, investigators reveal to discuss about sexual abuse and preventing techniques.

Key Words: Sexual Abuse, Sexual Harassment, Live-Inning, Preventing Sexual Abuse, Preventing Techniques, Education

E. Introduction

In 2007, Ministry of Women and Child Development study adds that over 50 percent of our children are sexually abused. In half of those cases, the abuse is perpetrated by persons in position of trust and majority of the children do not report it. The sex education can overturn this ritual silence, supply our young people tools to report and resist sexual abuse, negotiate with their feelings and fears.

It is indeed unusual that while sex is such an integral part of one's life, parents and elders including teachers in India hardly play any significant role in providing scientific knowledge about sexuality. Generally, they avoid any mention to the sex in their day to day relationship with their children. This is because it is still treated as a taboo subject in Indian society and secondly as they themselves lack scientific knowledge about it. The result is that most of our adolescents learn about sex in an almost unaltered manner thereby giving rise to all sorts of myths and misconceptions.

Major internal and external changes like, changes in body size and proportions, maturity of sex organs and appearance of secondary sexual characteristics develop during adolescence. These changes in turn will lead to doubts, confusions and uncertainties. There is always a sense of shame and guilt, and a feeling that the problems they experience are



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



MuktiShabd Journal

ISSN NO: 2247-5156

SEXUALITY EDUCATION IN MODERN ERA

Dr. Shikha Kumar¹ & Ms. Sharmila Srivastava¹

¹ & ² Assistant Professor, Department of Education

CMP College, University of Allahabad (A Central University), Uttar Pradesh, India

Abstract: Girls are also more likely to experience intimate partner violence (emotional and/or physical) rape by acquaintances or strangers; child or early forced marriage; trafficking for the purposes of sexual exploitation and child labour. Such violence occurs in many settings, including those where girls should be safe and nurtured – at home, travelling to, from and while at school; in their communities; and in situations of humanitarian emergency, displacement, or post-conflict settings. Globally, nearly one in three adolescent girls aged 15 to 19 (84 million) have been the victims of emotional, physical and/or sexual violence. A report of nationally representative survey done on the prevalence of violence against children in 95 countries estimates that 1 (one) billion children globally – over half of all children aged 2–17 years – have experienced emotional, physical or sexual violence in the past year. Despite its high prevalence, violence against children is often hidden, unseen or under-reported. Its hidden nature is well documented – for example, a meta-analysis of global data finds self-reported child sexual abuse 10 times higher and physical abuse 75 times higher than official reports would suggest. Girls are particularly vulnerable to sexual violence. For example, the life time prevalence of child sexual abuse is 18% for girls, compared to 8% for boys. Perpetrators of sexual violence against girls are predominantly males. In this paper, we are trying to write the need of sexuality education of this modern era. Hopefully, this paper will be given a right direction to think about the need of sexuality education.

Key Words: Sexuality Education, Violence, Harassment, Educational Programmes

Introduction

Emotional or psychological violence and witnessing violence includes restricting an adolescent girl's movement, degradation, ridicule, threats and intimidation, discrimination, rejection and other non-physical forms of hostile treatment. Witnessing violence can involve forcing a girl to observe an act of violence, or the incidental witnessing of violence between two or more other persons. When directed against girls or boys because of their biological sex or gender identity, any of these types of violence can also constitute gender-based violence.

Sexual violence includes non-consensual completed or attempted sexual contact, non-consensual acts of a sexual nature not involving contact (such as voyeurism or sexual harassment), acts of sexual trafficking committed against someone who is unable to consent or refuse, and online exploitation. Maltreatment (including violent punishment) involves physical, sexual and psychological/emotional violence; and neglect of adolescents by parents, caregivers and other authority figures, most often in the home but also in settings such as schools, colleges and orphanages.

Bullying (including cyber-bullying) is sustained aggressive behaviour by another



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



Studies in Indian Psychology
(IUGC Core Journal)

2020, 49(4)

DOI: 10.5958/2474-8658.2020.00000.000

A Study of the Parental Pressure and Its Influence on Students Academic Achievement at Secondary Level

Dr. Himanshu Kumar & Ms. Sharmila Srivastava

Assistant Professor

CMP College, University of Allahabad (A Central University), Uttar Pradesh, India

Abstract: The study is focused on early adolescence since parentization tends to mount up during this period and their urge for autonomy run more than recent parental control. This in turn can lower their academic interest as well as their academic performance. Parental parentization in studies can be destructive to the confidence of children. Also, too much emphasis on studies, being overprotective for self-enclosed and aggressive, might extinguish the spark of Creativity in adolescents. The age from 10 to 14 years is considered as one of the critical periods in life during which creative ability can be cultivated most effectively. Aim of the present study is to determine the parental pressure and its influence on student's Academic achievement at secondary level. For this investigation, a sample consisted of 200 students of secondary level from Delhi region. The results of the study find the need for self-enclosedness while teaching in children's studies and extra-curricular activities. This is especially important in children from the low socio-economic status, because of the high pressure they are found to possess in the present study. The high positive link between Self-esteem and academic interest found in the study has contributed to the existing literature on self-esteem and children's education. The study suggests that improved self-esteem accompanies better academic interest along with low levels of stress in the examinations and vice versa. The prediction of creativity scores by academic achievement shows a high positive link between creativity and academic achievement revealing the reveal significant positive interrelationships among academic achievement, creativity and self-esteem and its existing literature relating the variables parentization, the study provides evidence to the stress-related problems of adolescents.

Key Words: Parental Pressure, Academic Interest, Actual Academic Achievement, Self-esteem, Creativity

Introduction

Academic parentization by parents to a certain extent, serves as a motivating force facilitating better academic performance by the children. Unfortunately, many Indian parents fail to keep up the golden mean of academic parentization. They tend to be very demanding and controlling, forcing their children to assimilate much more than they can, without realising their potentialities and limitations. The curricula have become examination-oriented, promoting rote learning and over burdening the children. The problem of parental



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय

C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)
Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme
Website: www.cmpcollege.ac.in



Parishadi Journal

ISSN NO:2347-6648

WAYS OF SEXUAL ABUSE AND PREVENTING TECHNIQUES

Dr. Jhendra Kumar¹ & Ms. Sharmila Sebastiana²

¹ & ² Assistant Professor, Department of Education
CMP College, University of Allahabad (A Central University), Utra Pradesh, India

Abstract: Sexual abuse may involve touching private parts, making him or her to touch himself or others, looking together, showing the child sexually oriented photographs or films, taking pornographic photographs, making personally gratifying sexual comments in front of, or with reference to the child, forcing the child to indulge in oral or anal sex and sexual intercourse. The body of a girl child is not the private or public domain of men where all men by their mere to be regarded as men.

By sexual assault, men misuse power over the most private aspect of a child's life, her body. Sexual assault is an assault against children in its physical, emotional, psychological, moral and social level. Sexual abuse is a widespread subject and people do not like to talk about it. Concerted efforts are made to concern the subject. Girl children, irrespective of their racial and ethnic background, economic status, caste, creed and religion have been sexually abused. Their 'vulnerability' and 'perpetrator' positions are taken advantage of by the abuser who uses his power to cause his abuse. The inalienable crime is an addition under layers of guilt, shame and sexual pressure that it goes undetected and unreported. While in victim the soul the torment all their lives. In this paper, investigators reveal to discuss about sexual abuse and preventing techniques.

Key Words: Sexual Abuse, Sexual Harassment, Live-Inning, Preventing Sexual Abuse, Preventing Techniques, Education

E. Introduction

In 2007, Ministry of Women and Child Development study adds that over 50 percent of our children are sexually abused. In half of those cases, the abuse is perpetrated by persons in position of trust and majority of the children do not report it. The sex education can overturn this ritual silence, supply our young people tools to report and resist sexual abuse, negotiate with their feelings and fears.

It is indeed unusual that while sex is such an integral part of one's life, parents and elders including teachers in India hardly play any significant role in providing scientific knowledge about sexuality. Generally, they avoid any mention to the sex in their day to day relationship with their children. This is because it is still treated as a taboo subject in Indian society and secondly as they themselves lack scientific knowledge about it. The result is that most of our adolescents learn about sex in an almost unaltered manner thereby giving rise to all sorts of myths and misconceptions.

Major internal and external changes like, changes in body size and proportions, maturity of sex organs and appearance of secondary sexual characteristics develop during adolescence. These changes in turn will lead to doubts, confusions and uncertainties. There is always a sense of shame and guilt, and a feeling that the problems they experience are



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



MuktiShabd Journal

ISSN: 2247-5156

SEXUALITY EDUCATION IN MODERN ERA

Dr. Shikha Kumar¹ & Ms. Sharmila Srivastava¹

¹ & ² Assistant Professor, Department of Education

CMP College, University of Allahabad (A Central University), Uttar Pradesh, India

Abstract: Girls are also more likely to experience intimate partner violence (emotional and/or physical) rape by acquaintances or strangers; child or early forced marriage; trafficking for the purposes of sexual exploitation and child labour. Such violence occurs in many settings, including those where girls should be safe and nurtured – at home, travelling to, from and while at school; in their communities; and in situations of humanitarian emergency, displacement, or post-conflict settings. Globally, nearly one in three adolescent girls aged 15 to 19 (84 million) have been the victims of emotional, physical and/or sexual violence. A report of nationally representative survey done on the prevalence of violence against children in 95 countries estimates that 1 (one) billion children globally – over half of all children aged 2–17 years – have experienced emotional, physical or sexual violence in the past year. Despite its high prevalence, violence against children is often hidden, unseen or under-reported. Its hidden nature is well documented – for example, a meta-analysis of global data finds self-reported child sexual abuse 10 times higher and physical abuse 25 times higher than official reports would suggest. Girls are particularly vulnerable to sexual violence. For example, the life time prevalence of child sexual abuse is 18% for girls, compared to 8% for boys. Prevalence of sexual violence against girls are predominantly under. In this paper, we are trying to write the need of sexuality education of this modern era. Hopefully, this paper will be given a right direction to think about the need of sexuality education.

Key Words: Sexuality Education, Violence, Harassment, Educational Programmes

Introduction

Emotional or psychological violence and witnessing violence includes restricting an adolescent girl's movement, degradation, ridicule, threats and intimidation, discrimination, rejection and other non-physical forms of hostile treatment. Witnessing violence can involve forcing a girl to observe an act of violence, or the incidental witnessing of violence between two or more other persons. When directed against girls or boys because of their biological sex or gender identity, any of these types of violence can also constitute gender-based violence.

Sexual violence includes non-consensual completed or attempted sexual contact, non-consensual acts of a sexual nature not involving contact (such as voyeurism or sexual harassment), acts of sexual trafficking committed against someone who is unable to consent or refuse, and online exploitation. Maltreatment (including violent punishment) involves physical, sexual and psychological/emotional violence; and neglect of adolescents by parents, caregivers and other authority figures, most often in the home but also in settings such as schools, colleges and orphanages.

Bullying (including cyber-bullying) is sustained aggressive behaviour by another



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



Alochana Chakra Journal

ISSN NO:2231-3990

RASHTRIYA UCHCHHATTAR SHIKSHA ABHYAN (RUSA) AND ITS PROVISIONS FOR GIRL'S EDUCATION

Dr. Abendra Kumar¹ & Dr. Sharmila Srivastava¹

¹ & ² Assistant Professor, Department of Education, CMP College, University of Allahabad (A Central University), Uttar Pradesh, India

Abstract: It is not doubt that education is a strong and effective weapon to survive in the society. Many children are going an education like as SSA (at elementary level), RMSA (at secondary level), RUSA (at higher education level) etc. In this aspect, in the 12th Plan period, RUSA have a financial outlay of Rs. 22,813 crore, of which Rs.16, 227 crore will be the Central share. In addition, allocation of Rs. 1,800 crore in the 12th Plan for the existing scheme. Sub-Mission provisions would also be witnessed in RUSA. This five total central share, including the existing scheme of polytechnics will be Rs. 18,027 crore during the 12th Plan. RUSA is a Centrally Sponsored Scheme spread over two plan periods, for improving access, equity and quality in the state higher education system. With over 98 percent of students enrolled in the state higher education system, there is a need for State colleges and universities to be strengthened through strategic central funding and implementing various such useful reforms. RUSA also aims to motivate States to step up plan investments in higher education.

RUSA made an many provisions for girl's education and in this manner, colleges and universities are getting funds from this scheme. In this paper, we will know the facilities for girls' women education under RUSA.

Key Words: Girl's Education, Higher Education, Gender Disparity, SSA, RMSA & RUSA

1. Introduction

The success of Sarva Shiksha Abhyan (SSA) and Rashtriya Madhyamik Shiksha Abhyan (RMSA) has laid a strong foundation for primary and secondary education in India. However, the system of higher education has still has not seen any assumed efforts for improvement in access or quality. The Cabinet Committee on Economic Affairs has approved the Rashtriya Uchchhata Shiksha Abhyan (RUSA), a Centrally Sponsored Scheme (CSS) for reforming the state higher education system.

Today, the higher education system as a whole is faced with many challenges such as financing and management, access, equity, relevance and reorientation of policies and programs for laying emphasis on value, ethics and quality of higher education together with the assessment of institutions and their accreditation. These issues are of vital importance for the country, since higher education is the most powerful tool to build a knowledge-based society for the future. The necessity of the challenges of providing equal opportunities for quality higher education to an ever-growing number of students is also a historic opportunity for reorienting sectoral and social imbalances, reinvigorating institutions, crossing international benchmarks of excellence and extending the frontiers of knowledge.



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



Hindi



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

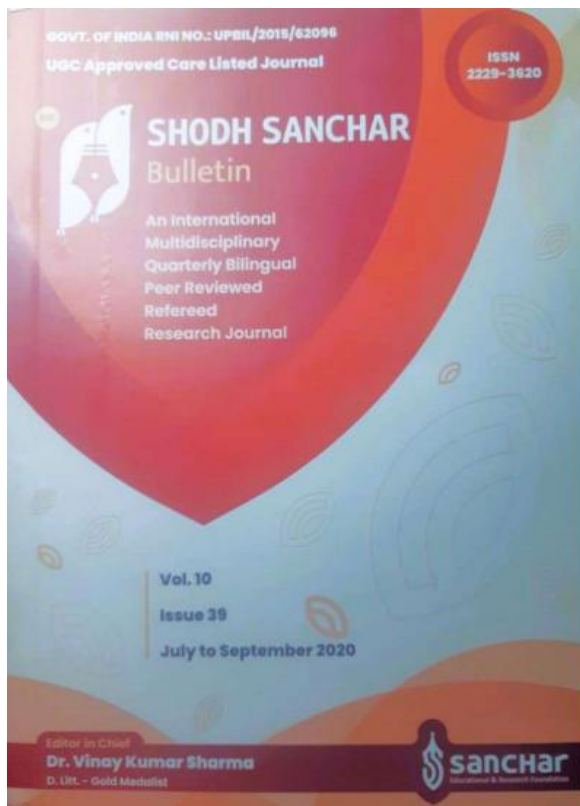
(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



Political Science



MODI'S STRATEGIC FOREIGN POLICY : ACCELERATING INDIA'S RISE AS A GLOBAL POWER

Govind Gaurav*

ABSTRACT

The emergence of Narendra Modi on world stage has given a new pace to India's foreign policy. Style and substance of Modi's foreign policy is slightly different from his predecessors. The vision and mission of 'India First' has directed his foreign policy towards pragmatism and proactive diplomacy. Hence, there are unprecedented expectations that the "Modi doctrine" has now been introduced in Indian foreign policy to meet the demands of new geopolitical realities those were not emphasised earlier. Thus, the aim of this paper is to explore and investigate those strategic initiatives and innovative transformations which came into the Indian foreign policy since the emergence of Modi and how his strategic initiatives would be effective in accelerating India's rise as a global power?

Keywords: Indian foreign policy, Modi doctrine, Strategy, India first, Global Power

Introduction

The advent of Narendra Modi as Indian prime minister aroused a great expectation about India's rise as a global power. Despite having the potential to become a major player in global politics due to the robust economic growth and increasing military and technological capacities, India appeared to be ineluctable and reluctant in its global presence during the Mamohan Singh's government. Modi's election in May 2014 was widely viewed as signifying a more decisive phase in the India's foreign policy due to his charismatic leadership, strongman image (56-inch chest rhetoric) and candid foreign policy goals to make India a global power.

As a prime minister, Narendra Modi showcased a new pace in foreign affairs space, which seems to be unique since the very first day of the swearing-in ceremony in May 2014 that was evident by the presence of almost all heads of government from South Asia. Also, with a flurry of overseas visits to large and small powers alike, he has brought a greater speed and intensity to the pursuit of foreign policy objectives. In fact, this extraordinary emphasis has led some commentators,

such as Mohan (2015a) to suggest that 'Modi's foreign policy has been so revolutionary. Modi's energy and intensity have generated new opportunities for India's relations with the major stakeholders in the region'. Hence, Modi's attempts to end India's defensiveness on the world stage, injected greater flexibility into India's position on global issues and constructed a new framework of pragmatism to make India a "leading power".

Mukherjee (2016) stated that Modi's Foreign Policy has also not only taken much greater notice of the ordinary Indian abroad, in need of help, assistance or rescue, recognizing their contribution towards India's foreign exchange reserves, but rekindled many dormant relationships. Hence, there is a buzz around the world and excitement and expectancy in the air about the launch of "Modi Doctrine" in the Indian foreign policy with the emergence of Narendra Modi on the world stage. Although, there has been a considerable scholarly debate over the existence of any such doctrine as well as the question, whether there is any change or continuity in Modi's foreign policy. For some scholars, such as

*Assistant Professor - Department of Political Science, C. M. P. Degree College, University of Allahabad, Prayagraj, India



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

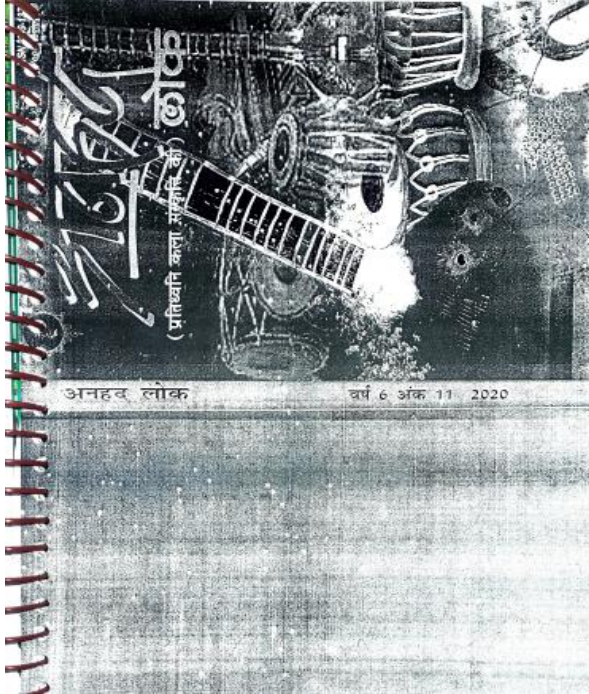
(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



Sanskrit



कला, चिन्तन एवं साहित्य में-नटराज शिव

डा. दीपति विष्णु

अति. प्रोफेसर (संस्कृत), सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज, अलाहाबाद

कृत्यपालकविर्वाहयोगेपि प्रमेयवरः ।
कान्तोपकरणपेक्षो यथा तां नीमि शाक्रीभू ।
(अभिनवगुप्त-दम्पत्यलोक टीका कथुर्व उद्योत)

प्राचीन भारतीय परंपरा में कला को साहित्य और संगीत के समकक्ष माना गया है। भरतृहरि ने ही 'साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात् पशुपुच्छ-विद्यामहीनः' कहकर इनसे विहीन व्यक्ति को पशुवत् माना है। प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में 64 कलाओं का उल्लेख मिलता है जिनका ज्ञान सभ्य एवं सुसंस्कृत व्यक्ति के लिए आवश्यक माना जाता था। कला शब्द की सिद्धि संस्कृत के 'कल' (कलाने=कृत्-टाप्) से हुई है जिसका अर्थ कोश में-सोभा, अलंकरण, चन्द्रमा का 16वीं अंश आदि किया गया है। 'कं ताति' इति कला इति व्युत्पत्ति के अनुसार कला का 'आनन्ददायक' यह अर्थ भी होता है। मनुष्य के कोशल द्वारा निर्मित लय, सज्जन, अनुपात, सुरंगति से युक्त कृति, जो मानव संवेदनाओं एवं मनोभावों को आनन्द पहुँचाएँ उसे कला कहा जा सकता है।

अति प्राचीनकाल से ही भारतीय मनीषियों ने कला के विषय में पर्याप्त चिन्तन किया है। उनके अनुसार संगीतकला तथा शास्त्र का उद्भव स्वयम्भू प्रमेयवर से हुआ है। भारतीय परम्परानुसार नटराज शिव नृत्यकला के आदि स्वोत्पत्ति हैं ब्रह्मा नाट्य के तो भगवती सरस्वती गीत तथा वाद्यकला की अधिष्ठात्री हैं। ऋग्वेद से लेकर ब्राह्मण, उपनिषद्, पुराण, महाभारत, रामायण, कामसूत्र, शुकनीतिसार, पुराण, काव्य, नाटक आदि में कला के विभिन्न स्वरों के दर्शन होते हैं। साथ ही कला सिद्धान्त के आधुनिक भारतीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय विचारकों में रवीन्द्र नाथ टागोर,

आनन्दकुमार स्वामी, ई.वी. हेबेन, आचार्य शुक्ल, जयशंकर प्रसाद, सर भोविपर विनियम्बर, पत्नी ब्राउन आदि हैं।

कला के दो भेद हैं—उपयोगी एवं ललित कला। ललित कला अथवा Fine Art का पश्चात् (रघुपथ्य अथवा वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीतकला, काव्यकला) निर्धारित करने वाले साहित्य-योगियों ने अभिनय अथवा नृत्य कला को इनमें स्थान नहीं दिया। तथापि इनमें सम्मिलित संगीत कला को 'गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्र्यसंगीतमुच्यते' के आधार पर नृत्यकला को स्वयं में समाहित कर लेनी है। नृत्य और संगीत तो प्रकृति तन्त्र में स्वयः विद्यमान हैं। गान में वाद्यों एवं विजली का नृतन, सागर में लहरों का नर्तन, चपन से लता-दुर्गों का नर्तन मानव समूह को नृत्य-संगीत की प्रेरणा देता रहा है।

भगवान् शिव नृत्य के जन्मदाता होने के कारण नटराज, नर्देश अथवा नर्तकेश्वर के नाम से जाने जाते हैं। नट अर्थात् कला अथवा नृत्य का राजा या देवता। नटराज शिव की अवधारणा भारतीय संस्कृति की महानत्तम उपलब्धि है जो सृष्टि के रहस्य पर पड़े हुए हमारे आचरणों को हटाकर हमें अपूर्व रहस्य से परिचित कराती है। माना जाता है कि स्वयं भगवान् शिव ने 108 नृत्यों का सृजन किया था। यही नृत्य सृष्टि के अनादि-अनन्त नृत्य को रूपायित करता है। नटराज के स्वरूप में जेवल सृष्टि का ही नहीं अतितु जीवन के भी रहस्य का सम्पूर्ण दर्शन अन्तर्भूत है, इसी मुखमुद्रा पर तो प्रथम होकर रागण का भस्म हृदय धोल उठता है—

अनहद-लोकर

187

वर्ष-6, अंक-11



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय

C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



Sociology

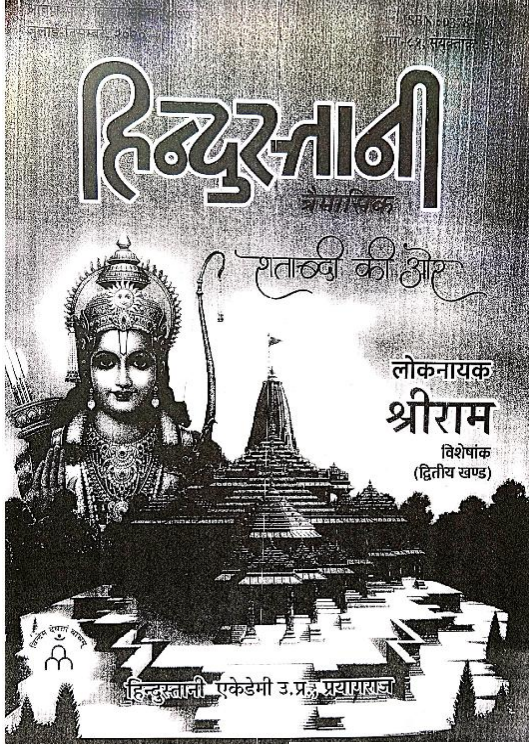


चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



हिन्दुस्तानी

त्रैमासिक

भाग - ८१, संयुक्तंक - ३४

जुलाई - दिसम्बर, २०२०

श्रावण - पौष, वि. संवत् २०७७

ISSN : 0378-391X

प्रकाशक

हिन्दुस्तानी एकेडेमी

१२ डी, कमला नेहरू गड, प्रयागराज-२११००२ (उ.प्र.)

दूरभाष : ०५३२-२४०७६३५

website

<http://hindustaniacademy.com>

email

hindustaniacademyup@gmail.com

Facebook Profile name

hindustani academy allahabad

Twitter

[hindustaniacademyup6@gmail.com](https://twitter.com/hindustaniacademyup6@gmail.com)

समस्त भुगतान हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयागराज के नाम मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजे।

शुल्क : एक प्रति रु. ५०.००, वार्षिक : रु. २००.००

विशेषांक : रु. १००.००

मुद्रक : आस्था पेपर कन्वर्टर्स, प्रयागराज

प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से हिन्दुस्तानी एकेडेमी या सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। समस्त कानूनी विवादों का न्यायक्षेत्र इलाहाबाद उच्च न्यायालय, उत्तर प्रदेश होगा।

आदि महाकाव्य महाभारत एवं पौराणिक ग्रंथों में भगवान् श्रीराम

अनंत सिंह जेलियांग

भारतीय साहित्य में भगवान् श्रीराम के अवतारण की एक लम्बी गाथा मिलती है। वैदिक साहित्य से प्रारंभ होकर अद्यतन साहित्य तक में राम अनेक रूपों में दिखलायी पड़ते हैं। ऋग्वेद में 'राम' शब्द का प्रयोग एक बार मिलता है। यहाँ उनकी गणना एक राजा एवं प्रतापी यज्ञमनों की श्रेणी में की गयी है।¹ वाल्मीकि रामायण में उन्हें विष्णु का अवतार कहा गया है जिसका वर्णन अनेक स्थलों पर मिलता है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार, रावण के अत्याचारों से तंग आकर सभी देवता ब्रह्मा को साथ लेकर विष्णु के पास गये और सभी ने उनसे यह प्रार्थना की कि लोकहित में वे दशरथ के पुत्र के रूप में अवतार लें। विष्णु ने उन्हें आश्वासन दिया और कौशल्या के गर्भ से वे राम के रूप में अवतरित हुए।² अवतरित श्रीराम आगे चलकर अहल्या का भी उद्धार करते हैं।³ अष्टावल्ग रामायण में राम को शिव, विष्णु और सूर्य का अभिन्न माना गया है।⁴ कृतिवास रामायण में भी राम और शिव का विभेद मिटा दिया गया है।⁵ भास के समय तक आते-आते विष्णु और राम एक हो चुके थे और दोनों के मध्य अभिन्नता मान्य हो चुकी थी।

भारतीय साहित्य में महर्षि वाल्मीकि को आदि कवि की संज्ञा से अभिहित किया गया है और उनका वाल्मीकि रामायण आदि महाकाव्य के नाम से जाना जाता है। आलोच्य काव्य के प्रारंभ में महर्षि वाल्मीकि नारद मुनि से प्रश्न करते हैं - "सागवन्! सम्प्रति इस लोक में कौन श्रेष्ठ एवं गुणवान् है? कौन विशेष पराक्रमी, धर्मज्ञ, सत्यवाक् और दृढव्रती है? कौन दिव्य चरित्र वाला और प्रियदर्शी है? कौन आत्मवान्, क्रोधजयी और तेजोमय है?" वाल्मीकि के इस प्रश्न का उत्तर देते हुए सर्वज्ञ नारद मुनि ने इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न राम के नाम का उद्घोष किया तथा उनके दिव्य चरित्रिक गुणों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया और कहा - "वे महावीर, धृतिमान हैं, वैश्याली तथा सनुवन्तः हैं, उनके कंठे विशाल और भुजाएँ बड़ी-बड़ी हैं। वे सत्य



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



2021

Chemistry





चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



Hindi

वर्षा अग्रफल

कला वर्ष	अवधि
द्वि 2021	अंक 04, वर्ष 11
पत्राङ्क	डॉ. कर्तवीर सिंह डॉ. माला कनिष्ठा डॉ. के. सी. अर्मा डॉ. तुषारदास अग्रवाल डॉ. वाघ्य शर्मा
संपादक	पल्लव
सहयोग	नमस्ता डेले, चैतन्य चौरा
कला-माला	विजिता विपरीत, प्रथमराज
सहायक रचित	150 रुपये (एक अंक)- एक ड्राफ्ट पैमाने पर-175 रुपये 300 रुपये (संस्करण)- एक ड्राफ्ट पैमाने पर-325 रुपये 5000 रुपये-आजीवन (व्यक्तिगत) 8000 रुपये-आजीवन (संस्करण) The Draft/Cheque may please be made in favour of 'Banasa Jan' Our A/C Details : SBI C/A No.51159024776 IFSC Code : SBIN00529206 Branch name : State Bank of India, D L DA V Model School, BN Block, Shalimar Bagh, New Delhi-110088
समस्ता पत्र व्यवहार	पल्लव 393, डी.डी.ए., ब्लॉक टी एंड डी कनिष्ठा अपार्टमेंट, शहीदा बाग, दिल्ली-110088 फोन नं. : +91-8150672904 (केवल सदेश हेतु) ई-मेल : banasajan@gmail.com वेबसाइट : www.noteul.com
चेर :	अग्रवाल पत्राङ्क से संवाद की समग्री अधिकांश थी। संपन्न पत्र का संपादन पूर्णतः अनौपचारिक। समस्त कानूनी विषयों का जवाब हम किसी व्यक्तित्व को देते।
सभी संस्करण-संस्करण-मुद्रण द्वारा 2021, डी.डी.ए., ब्लॉक टी एंड डी, कनिष्ठा अपार्टमेंट, शहीदा बाग, दिल्ली-110088 से प्रेषित और प्रेषित किए, विभिन्न संस्थाओं परीक्षा, डी.डी. एंड, शहीदा बाग, दिल्ली-110088 के पुराने।	
BANASA JAN A Collection of Literature Language : Hindi ISSN 2231-6558	

अंधकार और प्रकाश के सम्मिलन का प्रारम्भिक बिन्दु : नीहार

शायासद की श्रेष्ठ प्रतिभा-साधना कर्मवीरजी चारदेवी वर्मा का स्वयं आधुनिक कविता में अग्रणी चरित्रपूर्ण है। चारदेवी जी जो मुझसे बड़ा जगत की सृजनशील और उत्तर्जनात्मक की सुश्रुत शैली पर व्यापक दृष्टि से देखने वाली कर्मवीरजी हैं। इनमें से न तो किसी एक के लिए आग्रह है और न तो दूसरे के लिए निन्दे। समय के अनुरूप विल कितनी वस्तु की उनके हृदय पर जिस तरह की प्रतिक्रिया हुई वही प्रति-गतिविधियों के रूप में सामने आ गई हैं। चारदेवी जी छायावाद युग में लेकर आते नई कविता के युग तक अपने कर्मवीरों से सम्बन्धी बत श्रेष्ठ कर रही हैं। उनकी साधना का यह तरीका है, फिर वही है दुप तक अपने कर्मवीरों से सम्बन्धी बत श्रेष्ठ कर रही हैं। उनका साधना का यह तरीका है, फिर वही है जिसके प्रति वे पूर्ण समर्पित रही हैं। अंधकार के लोक से आनन्द लोक तक वे बिना रुके चल रही हैं। उनमें जो कुछ है सत्य है अतः प्रतीति है, अंध शाप्य नहीं, प्रथम सापेक्ष नहीं। वे एक स्त्री होने के नये प्रतिबद्ध नहीं बल्कि उन्होंने आधुनिक काल की अंध और अंध श्रेष्ठ में सर्वाधिक योगदान दिया है। उनकी तब-प्रक्रिया के पीछे न केवल धारणा, कल्पना, बुद्धि और संवेदनसामक उद्देश्य होते हैं, बल्कि जीवन की अनुभूति भी होती है, जो कवि के अन्तर्गत का अंग है।

साहित्य की अनेक प्राचीन नवीन विधाओं में कविता ही ऐसी विधा है, जिसके सम्बन्ध में अनेक मतभेदों और विवादों की कथा न समाप्त होने वाली रहती बल्कि बढ़ती आ रही है। अनेक युग में इन सम्बन्धन श्रेष्ठता में कुछ नवीन कविताएँ लुप्त जा चुकी हैं, टूटती गयीं। कविता तो स्फटिक जैसी दिखने वाली कविता की हकीकत है। इसी तरह युग में सुझाव आना अस्मिन् विधा में ही तभी उसे सच्चा की संज्ञा मिलती है। इसी प्रकार काल जब मनोव्यक्त से एक रास हो जाता है, तब उसे सच्चात्व का प्रमाण मिलती है। काल्य व तो पूर्ण से काल्यता ही हो सकता है और न केवल आंतरिक, उसकी सफलता और सार्वजनिक का साधन प्रकृति, व्यक्ति और अर्थ की साधना में ही सम्मिलित है। चारदेवी जी को कविता के संदर्भ में कुछजब की का मानना है-“जब सब कुछ नील जाता है सब प्रतीत हो जाता है, इतिहास और समय की धूल और धुंध जब बैठ जाती है तो चारदेवी की कविता सामने आती है। जब अंधों के जन्म होते, तबके सन्तानों में समय चलता। सुभद्रा जी और चारदेवी जी में सही फर्क है। सुभद्रा जी सिद्ध इतिहास की यन्तु है, चारदेवी इतिहास के ऊपर...समय के सिर पर, समयजाली में समय के बाहर खड़ी। एक आशा है जो अन्तर्व्यक्ति में स्थित है। चारदेवी ने कहीं कहा है कि जो काल जिसने ही सुखे अन्तर्गत साधनी का इस्तेमाल करती है वह उसकी ही सुभद्रा और चारदेवी और बड़ी होती है। एक बहिर एक भूत, बुद्ध का एक हृदय एक कैनवास तब हो सकते हैं, लेकिन धारि सर्वाधिक अन्तर्गत और अंध है। चारदेवी की कविता एक अन्तर्व्यक्ति है। इतिहास और धारणाएँ और रूप उसके लिए निरर्थक है। शाप्य निरर्थक है। चारदेवी की कविता के बिना 'शायासद' अधूर्ण है। प्रसन्न, पत्र, विरासत अन्तर्गत कविता को समय से मिलाने के लिए इधर-उधर होना-पीना प्यारे हैं। चारदेवी तक ले मत नहीं छोड़ें। फिर भी उनकी कविता समय से सिर चढ़कर चोती है। एक सौधी गेहा है जो समय के पूरे पीछे की चरती है।”

चारदेवी जी ने अपने मनोव्यक्त और विचारों के अनुभूत काल-रचना की है। उनकी रचनाओं में आधुनिक से यह पता चलता है कि वे स्वयं एक उत्तरी हुई कविता कर गईं हैं जिसका परिणाम प्राप्त करके

पत्र अग्रवाल : साधना और कविता : अंक 04, वर्ष 11
49-डी-97, 'अंध' पत्र, संस्करण - 2010
फोन : 945500419

136 चतुर्थ अंक



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



Political Science

Vol. 24-No-3-Part-2-2021 RNI No. 46269/87 ISSN-0975-4520 IMPACT FACTOR 4.815

कला सरोवर

कला एवं धर्म शोध संस्थान, वाराणसी द्वारा संचालित
कला सरोवर (त्रैमासिक)
भारतीय कला एवं संस्कृति की विशिष्ट शोध पत्रिका
(Kala Sarovar Quarterly Approved Journal by UGC Care List)

प्रकाशक : कला एवं धर्म शोध संस्थान
बी. 33/33 ए-1, न्यू साकेत कालोनी,
बी.एच.यू., वाराणसी - 221005
Phone- 0542-2310682, Mob- 9451397205

मूल्य : 1000.00 रुपये (Vol.24-No.-3-Part-2-2021)
वार्षिक सदस्यता शुल्क- 4000.00 रुपये
आजीवन सदस्यता शुल्क- 50000.00 रुपये

© प्रधान सम्पादक - कला सरोवर
ISSN : 0975-4520

Copyright (सर्वाधिकार सुरक्षित)

'कला सरोवर' शोध-पत्रिका में प्रकाश की गई, छात्रकर्मों और रचयिताओं का अल्प उद्योग प्रदान होता है। पूर्ण विवरण अनुभव में ही किताब 'कालोनी' पत्रिका में प्राप्त किया जा सकता है। शोध-पत्रिका संपादक परिषद का एक प्रकाशित लेखों में उनका सहयोग होता है। विचार की विविधता में संचालित 'कालोनी' लेखों को प्रकाशित होता है।

कम्प्यूटर अक्षर संरचना :
कला कम्प्यूटर मिडिया
बी. 33/33 ए-1, न्यू साकेत कालोनी,
बी 0 एच यू 0, वाराणसी-5
दूरभाष : 0542-2310682
Email Id : kalsarovarresearchjournal@gmail.com
kalsarovar@yahoo.in

मुद्रक :
सनीष प्रिंटिंग प्रेस
बी. 33/33 ए-1, न्यू साकेत कालोनी, बी.एच.यू., वाराणसी
पिन- 221005, उ.प्र.

**भारतीय राजनीति में चुनावी लहर और उसके निहितार्थ
(मोदी लहर के विशेष संदर्भ में)**

• प्रशांत कुमार टाकूर • • डॉ० योगिन्द्र मोहर

सारांशिका

भारतीय राजनीति में चुनावी लहर को महत्वपूर्ण स्थान और चुनावी लहरों को प्रभावित करने वाले एक महत्वपूर्ण अवकाश के रूप में देखा जाता है। चुनावी लहर को राजनीतिक विद्वानों की चर्चा भारत में पचासी बर 1970-80 के दशक में सीधिया समूहों ने दूरिद लहर के रूप में देखा था। हालांकि 1984 के लोकसभा चुनावों के बाद किसी भी राजनीतिक दल को लहर चुनाव नहीं मिलने के कारण चुनावी लहर जैसे संज्ञाचक्र को असाधारण माना जाने लगा। लेकिन 2014 के लोकसभा चुनावों में नरेंद्र मोदी के उदय और उनके नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी को मिले जायक अवसरालेन और लहर चुनावों ने एक बार फिर चुनावी लहर को प्रत्यक्ष बना दिया है। राजनीतिक पंडितों एवं नीतिगत समूहों ने इसे दूरिद लहर के समानुपाय बताया है और मोदी लहर कहा। भारतीय चुनावी परिदृश्य में मोदी लहर को निरंतरक उपस्थिति 2014 के बाद से विचारित करने काया की विद्यमानता एव 2019 के लोकसभा चुनाव में भी देखा गया और कर्तविक्रम अभी भी जारी है। ऐसे में यह संध यह भारतीय राजनीति में चुनावी लहरों के विविधताओं के विशलेषण करने का एक प्रयास है। इस अंश में यह दूरिद लहर और मोदी लहर के लोकसभिक विशलेषण में तथा मोदी लहर के राजनीतिक प्रयासों का भी परीक्षण करता है। यह संध विशलेषणक रूप कायको का अन्वेषण करता है जो मोदी लहर को प्रेरित करने और उसे स्थिरक व निरन्तरक देने में महत्वपूर्ण रहे। अन्ततः यह संध यह मोदी लहर के विशेष संदर्भ में भारतीय राजनीति में चुनावी लहरों के विशलेषण, निरन्तरक, विविधताओं और निष्कर्षों का विशलेषण करता है।

संकेत शब्द: भारतीय राजनीति, महादान व्यवहार, चुनावी लहर, दूरिद लहर, मोदी लहर

प्रस्तावना

लोकसत्र में चुनाव एक आकाशा का प्रतिनिधित्व करने हैं और यह जनता की चुनावों में भागीदारी और उसके महादान व्यवहार से परिनिमित्त होती है। चुनावों में कभी-कभी कुछ ऐसे विशिष्ट तत्व अथवा कारण विद्यमान रहते हैं जिनसे महादान व्यवहार का कुछ एक निश्चित दिशा में परिधीत होने लगता है। इस प्रकार जब किसी चुनाव का परिणाम अथवा महादानाओं की साधनाएँ किसी व्यक्ति अथवा दल के पक्ष या विपक्ष में व्यापक रूप से परिधीत होती हैं तो इसे सामान्यतया चुनावी लहर (वेव इलेक्शन) कहा जाता है। चुनावी लहर किसी दल की राजनीति की शक्ति संरचना में बड़े बदलाव को रेखांकित करती है। भारतीय राजनीति में ऐसा ही बड़ा शक्ति परिधीतन 2014 में मोदी लहर के रूप में देखा जाता है। इस चुनावी लहर में न सिर्फ भारतीय जन आकाशाओं और राजनीतियों को आधार दिया बल्कि नरेंद्र मोदी को भी भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में सबसे बड़े राजनेताओं में शामिल कर दिया। इस चुनावी लहर में मोदी का एक ताकतवर नेतृत्वकर्ता के रूप में उदय हुआ जो किसी समस्या का समाधान कर सकता है अथवा उसका मुकाबला कर सकता है। भारतीय जनता के बीच मोदी की एक ऐसी छवि का निर्माण हुआ जिसकी लोच प्रशासना या पूजा भी करने लगे। वहाँ तक की मोदी के चेहरे के भाव लोगों में लोकप्रिय हो गए और 'हर-हर मोदी, घर-घर मोदी' जैसे राजनीतिक नारे न सिर्फ गढ़े गए बल्कि जनता के बीच काफी प्रचलित भी रहे। 2014 के बाद के विभिन्न राज्यों के विधानसभा चुनावों और फिर 2019 के लोकसभा चुनाव में भी मोदी लहर में और भी अधिक तीव्रता और निरन्तरता देखी गई। जनवरी 2021 के अंत में भी मोदी भारतीय राजनीति के सबसे प्रभावशाली, शक्तिशाली और लोकप्रिय नेताओं में अग्रिम स्थान पर बने हुए हैं। हालांकि भारतीय राजनीति में पहाली बार चुनावी लहर का प्रयोग दूरिद लहर के रूप में 1970-80 के दशक में सीधिया समूहों के द्वारा किया गया परंतु विभिन्न राजनीतिक पंडित मोदी लहर को दूरिद लहर से भिन्न और अधिक प्रभावी मानते हैं। तथ्याधि दूरिद लहर और मोदी लहर में एक महत्वपूर्ण समानता देखी जा सकती है दोनों ही लहरों के उदय में प्रभावशाली और वरुद्ध नेतृत्व की महत्वपूर्ण भूमिका थी। दूरिद लहर में जवा 'दूरिद' इस दूरिद: दूरिदता दूरिदता' जैसे नारे गढ़े गए वहाँ 'हर-हर मोदी, घर-घर मोदी' मोदी लहर का प्रथम बने बने प्रयास। राजनीति के विद्वान दोनों ही राजनेताओं के व्यक्तित्व और कार्यशैली में नेतृत्व पूजा और अधिभाषक की छवि को उल्लेख करते हैं। लेकिन इस महत्वपूर्ण समानता के होते हुए भी दूरिद लहर की तुलना में मोदी लहर में

• शोध प्रार, राजनीति विज्ञान विभाग, बी.एच.यू., दिल्ली कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय।
• अतिरिक्त प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, बी.एच.यू., दिल्ली कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय।



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



Psychology

ANVESAK
ISSN : 0378 – 4568

UGC Care Group I Journal

COLLECTIVE ACTIONS, SOCIAL DISTANCING AND BELIEF IN SCIENCE IN THE AGE
OF COVID-19: A CORRELATIONAL STUDY

Dr. Mahesh Kumar Maurya

Assistant Professor, Department of Psychology, C.M.P. Degree College, University of Allahabad,
Prayagraj (U.P.), India, Email: mahesh.psy.09@gmail.com

Dr. Manoj Kumar Pandey

Assistant Professor, Department of Applied Psychology, Veer Bahadur Singh Purvanchal University,
Jhansi (U.P.), India, Email: dr.manoikumarpandey@yahoo.com

ABSTRACT

The purpose of the study was to investigate the patterns of relationships between collective actions, social distancing and belief in science among general population in India. The study was conducted on a sample of N=235 (167 male and 68 female) general population in India. Participants' responses were obtained on questionnaires, which measured collective actions, social distancing and belief in science. Results indicated that collective actions were significantly, positively correlated with their belief in science and collective actions significantly, positively predicted 6.1 percent of variance in belief in science. Findings also showed that **social distancing** was significantly, positively correlated with their belief in science and social distancing significantly, positively predicted 17.6 percent of variance in belief in science among general population in India.

Keywords: Collective Actions, Social Distancing, Belief in Science

Introduction

Collective Actions, Social Distancing and Belief in Science

Moreover, this millennium has already suffered three pandemics (Namely Swine Flu in 2009, Middle East Respiratory Syndrome (MERS), Severe Acute Respiratory Syndrome (SARS)) and Covid-19 may not be the last. Yet, the global community has failed to develop a comprehensive, concerted plan of action, to combat this terror. Global war against the virus will require much more global collective efforts. This is because, as long as the virus is alive in some corner of the world, it can strike back and turn into a pandemic again. Further, national shutdowns have saved lives from the assault of Covid-19, but it poses the risk of losing lives to starvation and malnutrition, somewhere in the world if adequate steps were not taken. However, global collective action has been and now remained inadequate. Speaking of focus – east, west, north and south – COVID-19 has dominated and is dominating conversations at all levels of society. The trickle-down effort from high and inter-governmental dialogue to finding medical, economic and social solutions is being discussed by family and friends as well.

As the COVID-19 outbreak in India enters the community transmission phase, the country needs to introduce community-wide steps to increase physical distancing, government and media should clearly, transparently and regularly communicate the risks, health advice and response measures, including postponing gatherings and curtailing movement, as well as a continuation of essential health services and socioeconomic support for those in need, especially the most vulnerable. Again we would expect to see people in situation COLLECTIVE ACTIONS to get block or lessen virus spreads through destroy or kill them using hand sanitizers and face mask.

In the month of March, the Prime Minister had addressed the nations twice-on March 19 and
Vol. 51, No.2 (I) July-December 2021



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



The Indian Police Journal

Volume 68, Number 3, ISSN 0537-2429
July - September, 2021

Editorial Board

Chief Patron

Sh. Balaji Srivastava, IPS,
DG, BPR&D, MHA,
New Delhi

Editor-in-chief

Sh. Neeraj Sinha, IPS,
ADG, BPR&D, MHA,
New Delhi

Managing Editor

Dr. Karuna Sagar, IPS
IG/Director (Publications Division)
BPR&D, MHA,
New Delhi

Executive Editor

Sh. Shashi Kant Upadhyay
DIG/DD (Publications Division),
BPR&D, MHA,
New Delhi

CONTENTS

S.No.	Title of the Article	Page No.
1.	Management of Prisons and Pre-Trial Prisoners, Dispelling Certain Myths and Some Suggestions for Reforms <i>R C Arora</i>	1-30
2.	Technology Trends - Challenges for Policing <i>Pankaj Kumar Singh</i>	31-42
3.	Electronic Evidence in Crime Investigation - Darknet & Policing <i>Pawan Kumar Shrivastava</i>	43-51
4.	Drishti: A Low-Cost Video-Conferencing Platform for District Policing <i>Ashish Tiwari, IPS, Nipun Agarwal, IPS & Adarsh Singh</i>	52-61
5.	Tackling Sexual Violence in Public Places in Cities <i>Alenkrite Singh</i>	62-74
6.	Role of Perceived Control in Organizational Commitment of Police Personnel <i>Abhay Pratap Singh, Sushma Pandey & Shashi Kant Upadhyay</i>	75-83
7.	Effects of Hierarchy on Job Satisfaction and Integrity of Police Personnel: A Research Note <i>Dr. Mahesh Kumar Maurya</i>	84-94
8.	Standard Operating Procedure for Audio-Video Interview of Anticorruption Cases <i>Dr. Priyanka Kacker & Ms. Unnati Sharma</i>	95-103
9.	Effective Leadership in Correctional Settings: A Study in Gujarat Prisons <i>Dr. KLN Rao & Dr. Reena Sharma</i>	104-113
10.	Examination and Linking of Offset Cross Mark Impressions on a Ballot Paper with their Source: An Unusual Document Case Study <i>Sushma Thakur & Mahesh Chandra Joshi</i>	114-122
11.	Safe City for Women <i>Ankita Singh, Shambhavi Singh & Ashish Tiwari</i>	123-131
12.	Precursor Chemicals: Trends, Patterns and Challenges in India <i>Dr. Karuna Dasari Subramanyam, Dr. Rajender Pal Singh & Dr. Harshad Thakur</i>	132-144
13.	Workplace under the PoSH Act during the Pandemic: Have the Boundaries Changed <i>Dr. Nidhi Saxena, Dr. Veer Mayank</i>	145-161



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

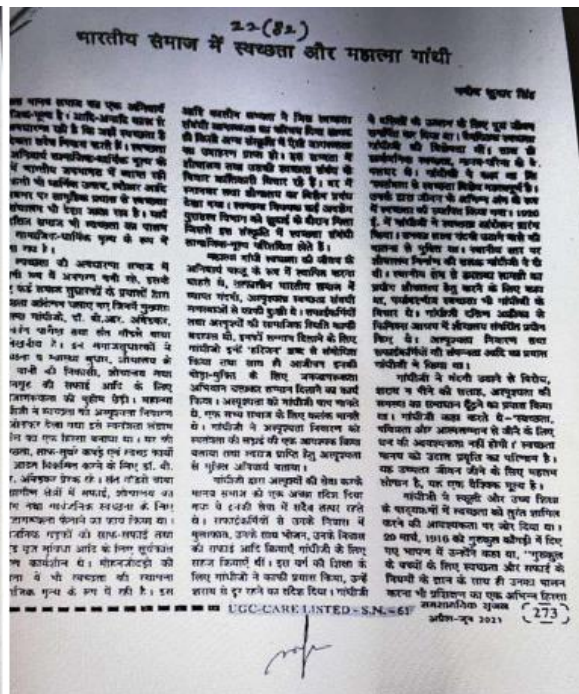
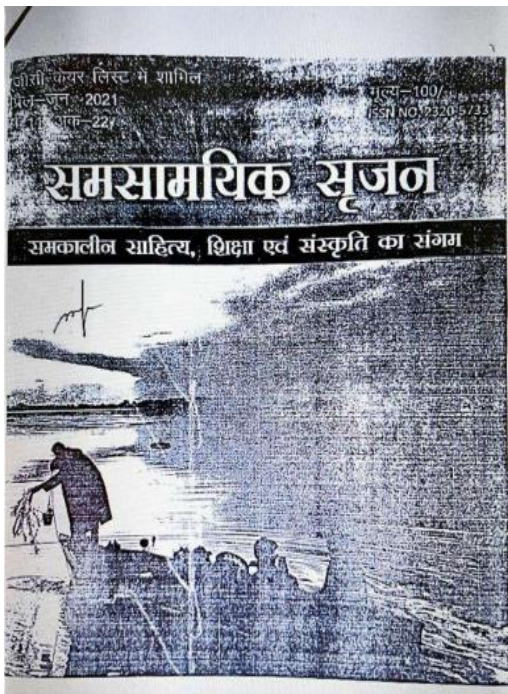
(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



Sociology





चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय

C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)
Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme
Website: www.cmpcollege.ac.in



Urdu



سبق اردو	
۹	چیف ایڈیٹر اور ایڈیٹر
۱۰	پروفیسر ثروت خان
۱۱	نیلیم احمد بشیر
۱۲	ڈاکٹر محمد طاہر
۱۳	ڈاکٹر الف ناظم (افتخار احمد قادری)
۱۴	ڈاکٹر سیدہ نسیم سلطانیہ
۱۵	ڈاکٹر صالحہ صدیقی
۱۶	ڈاکٹر محمد مصطفیٰ
۱۷	منقارہ احمد
۱۸	منقارہ احمد ڈار
۱۹	روزی ناز
۲۰	ریاض احمد
۲۱	ڈاکٹر محمد اسلم پرویز اسلم
۲۲	ڈاکٹر دانش اللہ آبادی
۲۳	سعدت حسن منٹو: ایک نئے زاویہ نظر سے
۲۴	ذرائع ابلاغ کی اہمیت و افادیت
۲۵	انک دھوپ تھی جو ساہ گئی آفتاب کے
۲۶	قلم شاہی عہد: کن میں فنِ تعمیر اور اردو زبان و ادب کا سنوا دور
۲۷	ساحر لدھیانوی کی شاعری کے فکری و فنی عناصر
۲۸	حالی اور نظم نگاری کی روایت
۲۹	فارسی افسانہ نگاری کا ابتدائی دور "ایک باز"۔
۳۰	کلام اقبال میں انسان کی عظمت کا بیان
۳۱	ذکیہ شہیدی: ایک منفرد افسانہ نگار
۳۲	احوال و آثار عاقل خان رازی
۳۳	"خمار خواب" پر ایک طائرانہ نظر



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय

C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)
Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme
Website: www.cmpcollege.ac.in



Pakistani Journal of Mathematics

Vol. 11 (Special Issue: II) (2022), 106-112

© Pakistan Polytechnic University, PPU 2022

ISSN 2075-8627 e-ISSN 2513-0210

Carpathian Math. Publ. 2022, 14 (1), 96-85

doi:10.1515/cmpp.2022.14.1.96-85



http://ejournals.ppu.edu.pk/index.php/cmpp
Karpathian Math. Publ. 2022, 14 (1), 96-85

On some classes of modules related to chain conditions

Surya Prakash and Avanish Kumar Chaturvedi

Communicated by Nourasadat Tsoatek

MSC: 2010 Classifications: 16P20, 16F40, 16P90, 16P70

Key words and phrases: iso-Artinian rings; iso-Noetherian rings; non-Artinian modules; non-Noetherian modules

Abstract We discuss some variants of ascending and descending chain conditions (see [2], [3] and [8]) analogously. We introduce the idea of *non-Noetherian* and *non-Artinian* modules and rings. A right R -module M is said to be *non-Noetherian* (*non-Artinian*) if for every ascending (descending) chain $M_1 \leq M_2 \leq M_3 \leq \dots$ ($M_1 \geq M_2 \geq M_3 \geq \dots$) of non-essential submodules of M , there exists an index n such that M_{i+1} embeds in M_i (M_i embeds in M_{i+1}), for every $i \geq n$. We characterize these modules such that M is *non-Artinian* (*non-Noetherian*) if and only if every non-essential submodule of M is *mono-Artinian* (*mono-Noetherian*) if and only if every proper closed submodule of M is *mono-Artinian* (*mono-Noetherian*). Also, we study several properties of these modules.

1 Introduction

Let R denote a ring (associative with identity) and M a unitary right R -module. Noether and Artin studied the ascending chain conditions (ACC) and the descending chain conditions (DCC) on ideals in a ring (submodules in a module). Many authors realized the importance of these concepts and generalized them in various ways. In 2016, Facchini and Nazzari studied the modules with chain conditions upto isomorphism and discussed Artinian dimensions and isoradical of modules in [6] and [5]. They call these modules by *iso-Noetherian* and *iso-Artinian* modules, respectively. Also, several characterizations and properties of these concepts have been investigated by them. Dastgour et al. [4] studied modules with epimorphism on any chain of submodules. They generalize the notion of *iso-Noetherian* and *iso-Artinian* modules and call them as *epi-ACC* and *epi-DCC*. In [8], we discuss some properties of *iso-Noetherian* and *iso-Artinian* rings and modules. We have studied the classes of *mono-Noetherian* and *mono-Artinian* modules in [2]. These notions are dual to that of *epi-ACC* and *epi-DCC* on submodules. We have studied some new variants of chain conditions.

Recall [7], two rings R, S are said to be Morita equivalent if there exists a category equivalence $F : M_R \rightarrow M_S$. A ring theoretic property P is said to be *Morita invariant* if, whenever R has the property P , so does every $S \simeq R$. Recall, a submodule N of an R -module M is said to be *closed* if N has no proper essential extension in M and a submodule L of a module M is said to be *essential* if $L \cap K \neq 0$, for every nonzero submodule K of M , otherwise L is *non-essential*. An R -module U is *uniform* provided $U \neq 0$ and $V \cap W = 0$ for all nonzero submodules V, W of U . Recall [7], an R -module M has *finite uniform dimension* (also known as *Goldie dimension*) if there is an essential submodule L of M that is a finite direct sum of uniform submodules.

In [3], we generalized the notion of *iso-Noetherian* (*iso-Artinian*) modules to *nes-Noetherian* (*nes-Artinian*) and *ei-Noetherian* (*ei-Artinian*) modules. In these notions, we consider the chain of non-essential and essential submodules, respectively. In the present work, we define the notions of *non-Noetherian* (*non-Artinian*) and *non-Artinian* (*non-Noetherian*) modules analogous to Definition 2.3 and Definition 2.4. We provide some characterizations and study many new properties of these classes of modules and rings. For undefined terms and notions, we refer [1] and [7].

Essentially iso-retractable modules and rings

Chaturvedi A.K., Kumar S., Prakash S., Kumar N.

A.K. Chaturvedi et al. (2021) call a module M *essentially iso-retractable* if for every essential submodule N of M there exists an isomorphism $f : M \rightarrow N$. We characterize essentially iso-retractable modules, *co-semisimple* modules (*V-rings*), *principal right ideal domains*, *simple* modules and *semisimple* modules. Over a Noetherian ring, we prove that every essentially iso-retractable module is isomorphic to a direct sum of uniform submodules.

Key words and phrases: retractable module, iso-retractable module, essentially iso-retractable module, essentially compressible module.

Department of Mathematics, University of Allahabad, Prayagraj – 20002, INDIA
E-mail: shchaturvedi.math@gmail.com, achaturvedi1@illduniv.ac.in (Chaturvedi A.K.),
skdhami19@gmail.com (Kumar S.), suryaprasakh.math@gmail.com (Prakash S.),
nitishprakash7@gmail.com (Kumar N.)

Introduction

In [3,4], first author introduced the notion of *iso-retractable* modules. A module M is called *iso-retractable* if for each nonzero submodule N of M there exists an isomorphism $\theta : M \rightarrow N$. A nonzero module is called *simple* if its every nonzero submodule is equal to the module; and a module is called *semisimple* if its every essential submodule is equal to the module. Observing that the class of *iso-retractable* modules is a generalization of *simple* modules, first and third authors in [5] introduced the notion of *essentially iso-retractable* modules which is a common generalization of *semisimple* modules and *iso-retractable* modules. They call a module M *essentially iso-retractable* if for every essential submodule N of M there exists an isomorphism $f : M \rightarrow N$.

The main aim of this work is to relate the classes of *essentially iso-retractable* modules and rings with other known classes in ring and module theory. Also, we provide some new properties and characterizations of the *essentially iso-retractable* modules and rings here.

This story begins by the idea of *compressible* modules. Following [2], an R -module M is *compressible* if for each nonzero submodule N of M there exists a monomorphism $\theta : M \rightarrow N$. In 1979, S.M. Khatri [8] defined the notion of *retractable* modules as a generalization of *compressible* modules. He called an R -module M *retractable* if for each nonzero submodule N of M there exists a nonzero homomorphism $\theta : M \rightarrow N$. In 2006, P.E. Smith et al. [15] defined the notion of *essentially compressible* modules as a generalization of *compressible* mod-

YAK 57/98
2010 Mathematics Subject Classification: 46B05, 46E10, 47A60

We are thankful to referees for reading this work carefully. The third author is grateful to the CMP Degree College for their support. The research of fourth author is supported by a grant from the University Grants Commission, India (UGC Ref. No: 1211/CSIR-UGC NET DEC. 2008)

© Chaturvedi A.K., Kumar S., Prakash S., Kumar N., 2022



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



Gandhian Economic Philosophy in the 21st Century

Sanjay Kumar Pandey

"The day the power of love overrules the love for power, the world will know peace."
Mahatma Karamchand Gandhi

Mahatma Gandhi has been regarded as one of the most influential successful persons the world has ever seen. He was unique in the sense that he blended spirituality with politics. He did not advocate religiosity in the political sphere. In fact, he was opposed to the politics in the name of religion. On the contrary, he stood for moral values in politics and national life. Gandhi's mission was not confined to seeking independence from the British, but to seek Truth as the reflection of God. Gandhi's struggle for independence by means of Satyagraha was just one of the many experiments that he carried out with truth.

For Gandhi, Truth, and not merely political goals, was the end and the devices such as nonviolence that he employed were means to achieve the supreme goal in whatever field he worked, social, political and economic. Thus, truth and nonviolence were closely interrelated and inseparable.¹

Gandhi believed that all problems, be it political, social, economic, environmental or social, arise from human conflict. Conflict resolution was an important aspect of rebuilding and reconstructing society in general and the community at large.

The foundations of this rebuilding, according to Gandhi, were Truth and Nonviolence. Gandhi referred to this truth as Satyagraha. Satya is a Sanskrit word that means Truth. It doesn't only refer to being truthful and not lying but encompasses a deeper religious philosophy. This philosophy finds references in ancient Indian traditions of living in austerity in thought, speech and action. For Gandhi, Truth was the most important tool for creativity, for construction and for prosperity of any kind.

Religion for Gandhi was not what we see it today as, bracketed, conforming, lethal but quite the opposite. For Gandhi, religion is not the dogmatic framework of an organised doctrine propounded with a certain name, but, on the contrary it is an experience that binds one to the truth within and purges one's actions to become truthful. He did not support those who were keen to re-establish the religious dogma. Instead, he often advised them to "carry God to the poor in a bowl of rice rather than a bundle of high dogmas and logic". Religion, as it meant to Gandhi, was the soul of all his social and political actions and also the ethical framework that Gandhi followed.

Modhya Bharti-83, July-December, 2022, ISSN 0974-0066, pp. 157-161
UGC Care List, Group-C (Multi disciplinary), Sl.No.-15



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



अधिगम

शैक्षिक शोधपत्रिका

अंक 24 : सितम्बर 2022



राज्य शिक्षा संस्थान, उत्तर प्रदेश
प्रयागराज।

अधिगम राज्य शिक्षा संस्थान, उत्तर प्रदेश की वार्षिक शैक्षिक शोधपत्रिका है। पत्रिका का मुख्य लक्ष्य है- शैक्षिक प्रक्रिया से जुड़े हुए समस्त जगत् तक, देश व प्रदेश में शिक्षा से जुड़े मुद्दों से सम्बंधित जटिलताओं पर चर्चा तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, शैक्षिक नवाचार, अनुभव, मूल्यांकन व शोध अद्ययन से सम्बंधित रचनाओं को प्रबन्धन में लाने हेतु उपयुक्त सामग्री प्रदान करना।

पत्रिका में प्रकाशित लेख तथा विचार लेखकों के स्वयं के हैं जिसका उत्तरदायित्व भी उनका स्वयं का है। अतः प्रकाशित लेखों के माध्यम से संस्थान की नीतियों को प्रस्तुत नहीं किया गया है और इसके लिए संस्थान का कोई उत्तरदायित्व नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित लेख या उनका कोई भी अंश संस्थान की अनुमति के पर्याप्त ही प्रकाशित किया जा सकता है।

ISSN : 2394-773X

भारत की "नेबरहुड फर्स्ट" पॉलिसी 2014 के बाद
भारत-नेपाल सम्बन्ध का एक विश्लेषणात्मक अवलोकन

डॉ० संजय कुमार पाण्डेय*
अभिषेक भारती **

परिचय

2014 में भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बुनाय को पड़ोसियों के साथ द्विपक्षीय संबंधों में सुधार के एक सकारात्मक युग के आगमन के रूप में देखा गया। भारत की 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति में नेपाल एक प्रमुख देश है। 2002 में सार्क शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारतीय प्रधानमंत्री की नेपाल यात्रा के बाद किसी भी भारतीय प्रधानमंत्री का यह प्रथम नेपाल का दौरा था। 2014 के शपथ ग्रहण समारोह में सार्क देशों को आमंत्रण तथा 17 वर्षों के बाद, 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नेपाल यात्रा द्विपक्षीय सम्बन्धों को प्रगाढ़ करने की उनकी इच्छा शक्ति तथा 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति में एक नए युग की शुरुआत का प्रयास व अपने पड़ोसियों के प्रति उनकी नीति व नियत का प्रतिबिम्ब थी। उनकी इस यात्रा में विवादास्पद 'नेपाल-भारत शांति और मैत्री संधि, 1950' सहित संधि की समीक्षा के लिए नेपाल-भारत प्रतिष्ठित व्यक्ति समूह (ईपीजी) का गठन करने का निर्णय लिया गया। दोनों देशों के प्रधानमंत्री के निर्देशन में गठित ईपीजी की रिपोर्ट पर दोनों देशों के बीच पूर्ण सहमति आज तक नहीं बन पाई है और सम्भवतया यही प्रमुख वजह रही है कि 'ओली' के नेतृत्व वाली नेपाली सरकार के समय भारत की 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति को लेकर नेपाल बहुत ज्यादा आशान्वित नहीं था। किंतु शेर बहादुर देउबा के प्रधानमंत्री बनने के बाद दोनों देश आशान्वित हैं कि द्विपक्षीय सम्बन्ध नए सिरे से परिभाषित होंगे। नेपाल यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी के वक्तव्य और धार्मिक धरोहरों का भ्रमण दोनों देशों के आम जनमानस की सांस्कृतिक समानता के माध्यम से भावनात्मक सम्बन्धों को मजबूत करने का एक सौचा समझा

* कनिष्ठ प्रोफेसर, राजकीय विज्ञान विभाग, श्री.एम.पी.डि.जी. कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
** विश्व कॉलेज, राजकीय विज्ञान विभाग, श्री.एम.पी.डि.जी. कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

1. Dharti, India, 2022



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



भारतीय लोकतंत्र में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता

प्रशांत कुमार ठाकुर

शोध सचिव, राजनीति विज्ञान विभाग, सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

मोबाइल नंबर

अधिष्ठाता प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

ईमेल: prashanthakur.aj@gmail.com

ज्ञान गरिमा सिंधु

(त्रैमासिक पत्रिका)

अंक-75

जुलाई-सितंबर 2022

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
शिक्षा मंत्रालय
(उच्चतर शिक्षा विभाग)
भारत सरकार

COMMISSION FOR SCIENTIFIC AND TECHNICAL TERMINOLOGY
MINISTRY OF EDUCATION
(DEPARTMENT OF HIGHER EDUCATION)
GOVERNMENT OF INDIA

संशोधन: लोकतंत्र में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता पारंपरिक रूप से विक के अधिनियम देशों में हरिया पर रही है। भारतीय लोकतंत्र भी इसका अपवाद नहीं है, हालांकि संविधान निर्माण के साथ ही कई महिलाओं को स्थान राजनीतिक और न्यायिक अधिनियम प्रदान कर दिए गए थे। लेकिन यदि भारत में चुनावों में महिलाओं की मतदान सहभागिता को देखें तो प्रथम लोकसभा चुनाव 1951-52 में स्थिति ऐसी थी कि लगभग 28 लाख महिलाएं मतदान करने में अपने नाम का इस्तेमाल किसी भी पार्टी अथवा गैर के रूप में होने की वजह से मतदान से ही सीमित रह गई थी। भारत में लोकतंत्र और सिद्धा के विकास के साथ ही प्रवृत्ति में व्यापक बदलाव देखने को मिले और चुनाव दर चुनाव महिलाओं की मतदान सहभागिता में वृद्धि देखी गई। पर इस दिशा में विशेष बदलाव 17वीं लोकसभा चुनाव 2019 में आया जब महिलाओं का मतदान प्रतिशत पुरुष मतदाताओं के समतुल्य पहुंच गया। महिला मतदाताओं की राजनीतिक सहभागिता में कुछ ऐसी ही सकारात्मक प्रवृत्ति वर्ष 2022 में पांच राज्यों की विधानसभा के लिए हुए चुनावों में भी परिलक्षित होती है जहाँ महिलाओं की सहभागिता पुरुषों के समतुल्य का अधिक दर्ज हुई है। ऐसे में यह शोध अंततः भारत की लोकतांत्रिक राजनीति में महिला मतदाताओं की उत्तरी राजनीतिक सहभागिता, विशेषकर मतदान सहभागिता में वृद्धि की प्रवृत्तियों और उनके बरतों को विवेचित करने का प्रयास है। प्रस्तुत शोधपत्र में राजन की सामाजिक-आर्थिक एवं राजनीतिक स्थितियों का महिलाओं की मतदान सहभागिता पर पड़ने वाले प्रभावों का भी परीक्षण किया गया है तथा इसके भारी निहितार्थों को भी अन्वेषित किया गया है।

संकेत शब्द: भारतीय लोकतंत्र, चुनावी राजनीति, महिला, राजनीतिक सहभागिता, मतदान सहभागिता

प्रस्तावना

लोकतंत्र को सशक्त एवं गतिशील बनाए रखने के लिए निश्चित अवधि पर चुनाव और चुनावों में जनता की सहभागिता आवश्यक है। मतदान राजनीतिक सहभागिता का एक औपचारिक और सामान्य तरीका है जो जनमत को अभिव्यक्त करता है। राजनीतिक सहभागिता की अवधारणा में इसके अतिरिक्त चुनाव में उम्मीदवारी, किसी वरत अथवा उम्मीदवार के लिए चुनाव प्रचार, राजनीतिक पद ग्रहण, दल एवं दलगत समूह की सदस्यता, राजनीतिक आन्दोलनों में सहभागिता, जनप्रतिनिधियों तथा संस्थाओं से संवाद आदि तत्व भी सम्मिलित होते हैं (कुमार और मिश्रा, 2022; राय, 2017)। चूंकि चुनाव लोकतंत्र का मूल तत्व है, ऐसे में राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि मतदान में सहभागिता ही राजनीतिक सहभागिता के अन्य जेठों की जड़ि वर केन्द्रीय बिंदु है। मतदान की प्रक्रिया में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी निश्चित रूप से किसी भी देश की राजनीतिक प्रणाली को सुदृढ़ता प्रदान करने के साथ साथ उसकी सार्थकता को दर्शाती है। लेकिन पारम्परिक सामाजिक संरचना में प्रभावी रूप से विद्यमान पितृव्यता के तत्व तथा उनके उनके अन्य

ज्ञान गरिमा सिंधु, अंक-75

जुलाई-सितंबर 2022

ISSN-2321-0443

80



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

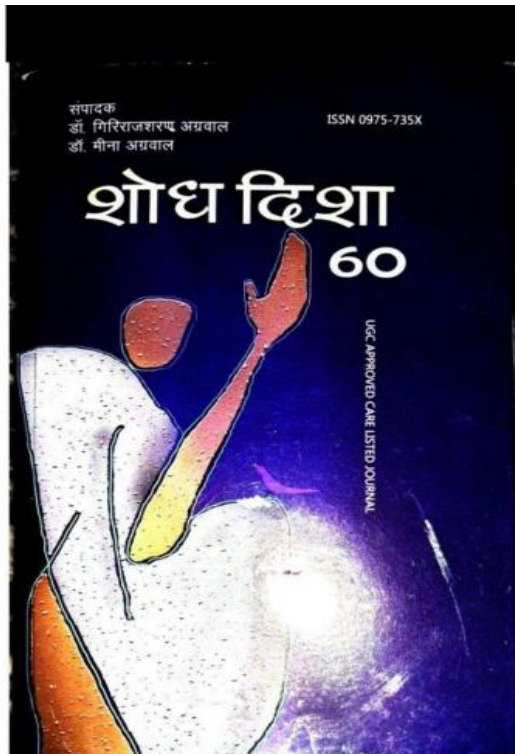
(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



Sociology



शोध दिशा ISSN 0975-736X

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका
केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से अनुदान प्राप्त
UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त शोध पत्रिका

शोध अंक 60/5 अक्टूबर-दिसंबर 2022 500.00 रुपये

<p>संपादकीय कार्यालय हिंदी साहित्य संस्थान, 16 साहित्य विहार, दिल्ली 246701 (उ-प्र.) फोन : 0124-4076565, 09557746346 ई-मेल : shodhdisha@gmail.com वेब साइट : www.hindisahityansanketan.com</p> <p>क्षेत्रीय कार्यालय इरिचाना डॉ० श्रीराम अग्रवाल ए-402, फर्क न्यू सिटी-2 सोहन रोड, गुरुगढ़ (हरियाणा)</p> <p>दिल्ली प्रेस-ऑफिस डॉ० अनुपमि सी-106, रिलकला अपार्टमेंट्स सी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा फोन : 09958070700 (एक से एक करण एवं अनौपचारिक हैं।)</p>	<p>संपादक डॉ० गिरिरामराम अग्रवाल 07838090732</p> <p>सूचना संपादक डॉ० नील अग्रवाल</p> <p>संयोजक संपादक डॉ० रामरंजन शर्मा</p> <p>उपसंपादक डॉ० अशोककुमार 09557746346</p> <p>डॉ० कल्पिता प्रजापति</p> <p>सहायक संपादक गीतिका गोपाल/ डॉ० अनुपमि</p> <p>सिद्धि प्रामाणिकता अनिलकुमार शर्मा, एडमिनेट</p> <p>आर्थिक प्रामाणिकता ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी-ए- रुपक</p> <p>आजीवन (एक वर्ष): छह हजार रुपये वार्षिक शुल्क : एक हजार रुपये एक इति : पैंच सौ रुपये</p>
---	---

प्रकाशित सामग्री में प्रकाशकीय त्रुटि का आशय नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित सभी विषय क्षेत्रों में प्रकाशित होने वाले लेखों का अर्थ ही है। लेखकों को 'शोध दिशा' पत्रिका के नाम पर कोई भी लेख लेखने से इनकार है।

संपादकीय, मुद्रण, प्रकाशन डॉ० गिरिरामराम अग्रवाल द्वारा ही सभी अनौपचारिक विवरण, दिल्ली 246701 में मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, दिल्ली (उ-प्र.) में प्रकाशित। पत्रिका का पता : LP-HW 2008/25034

पत्रिका : डॉ० गिरिरामराम अग्रवाल

ISSN 0975-736X अक्टूबर-दिसंबर 2022 # 1



चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय C. M. P. DEGREE COLLEGE

(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Under the Strengthening Component of DBT Star College Scheme

Website: www.cmpcollege.ac.in



ऑनलाइन शिक्षा एवं बालकों का समाजीकरण

(वैयक्तिक अध्ययन पर आधारित एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

डॉ॰ रुचिका चौधरी, असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग

सी॰एम॰पी॰ डिग्री कॉलेज, प्रकाशगञ्ज

(इलाहाबाद विश्वविद्यालय का एक संघटक स्नातकोत्तर महाविद्यालय)

मानव समाज में जन्म लेने के साथ ही बालक के समाजीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है। जन्म के समय बालक किस भी प्रकार के सामाजिक गुणों से अनभिज्ञ होता है। माता-पिता एवं जीविकीय सदस्यों के संपर्क एवं सान्निध्य के फलस्वरूप बालक में सामाजिक गुणों का विकास प्रारंभ होता है। समाजीकरण की प्रक्रिया परिवार से प्रारंभ होती है यही कारण है कि परिवार को समाजीकरण की प्रथम पाठशाला कहा जाता है जहाँ बालक में प्रेम, त्याग, बलिदान, सहयोग, दया, क्षमा, परीपकार, देशप्रेम, सहिष्णुता, आजाकारिता, अनुकूलन आदि गुणों का विकास होता है। सभ्यता का प्रयोग, उचित-अनुचित में भेद करना बालक परिवार में ही सीखता है।

समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा नई पीढ़ी उस ज्ञान, बुद्धिकोण और मूल्यों को लेवती है जिसको उन्हें उत्पारक नागरिक बनने में आवश्यकता होगी। ए॰ब्ल्यू॰ ट्रीन के शब्दों में 'समाजीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा बच्चा सांस्कृतिक विशेषताओं, आचरण और व्यवहार को ग्रहण करता है।' जानसन के अनुसार, 'समाजीकरण सीखने की वह प्रक्रिया है जो सीखने वाले को सामाजिक भूमिकाओं का निर्वाह करने योग्य बनाती है।'

ऐसी मान्यता है कि सीखने की कोई उम्र नहीं होती है तथा सीखने की प्रक्रिया जीवनवर्ष भर चलती रहती है। इस रूप में मानव के समाजीकरण की प्रक्रिया बहुत लंबी एवं खटिल है। इस क्रम में विभिन्न सामाजिक संस्थाओं एवं समूहों का भी योगदान होता है। इन सामाजिक संस्थाओं एवं समूहों में बालक अपने आयु वर्ग समूह एवं स्थिति के अनुसार समय-समय पर विभिन्न क्रमबद्धता सीखता है। बालकों के समाजीकरण में योग देने वाले इन अधिकरणों (संस्थाओं) को क्रमिक एवं द्वैतीयक संस्थाओं में विभक्त कर समझा जा सकता है। समाजीकरण के प्राथमिक अधिकरण वे हैं जिनके संपर्क में बालक प्राथमिक एवं अनौपचारिक रूप में रहता है जैसे-परिवार, पड़ोस, मित्रमंडली, विवाह एवं नातेदारी समूह। द्वैतीयक संस्थाएँ वे हैं जिनके संपर्क में बालक क्रमिक एवं औपचारिक रूप में आता है जैसे-विद्यालय, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक संस्थाएँ एवं व्यावसायिक संगठन आदि। परिवार के परभाव विद्यालय वह द्वैतीयक अधिकरण है जिसकी बालक के समाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका है। संरचनात्मक प्रकाशिकारियों का मानना है कि शिक्षा जैसे प्रमुख संस्थानों का उद्देश्य बच्चों और किशोरों का समाजीकरण करना है।

परिवार के परभाव शिक्षण संस्थान समाजीकरण की जिम्मेदारी लेते हैं। कुछ संस्थाओं में (जैसे कि-साक्षर समाज), समाजीकरण लगभग पूरी तरह से परिवार के अंदर होता है लेकिन व्यवस्थित ढंग से बच्चों का भी शैक्षिक प्रणाली द्वारा समाजीकरण किया जाता है।

